पञ्चदेवोपासना स्तोत्र सङ्ग्रह

सन्ध्या वन्दन के समय पढ़े जाने वाले स्तोत्र

अनुक्रमणिका

श्री गणेश जी के स्तोत्र :-

श्री गणेश मंत्र 2

श्री गणेशपञ्चरत्नम् **2**

श्री सूर्य नारायण के स्तोत्र :-

सूर्याष्टकम् 6

श्री शिव जी के स्तोत्र :-

श्री शिव मंत्र 9

शिव प्रातःस्मरणस्तोत्रम् 9

श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् 11

शिव मानस पूजा स्तोत्र 14

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्र 17

लिङ्गाष्टकम् 18

वेदसारशिवस्तवः 21

श्री दुर्गा देवी के स्तोत्र :-

श्रीदुर्गासप्तश्लोकी (अम्बा स्तुति) 26

देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् 29

भवानी अष्टकम् 35

श्री राधा रानी के स्तोत्र :-

राधाषोडशनामस्तोत्रम् 39

श्री कृष्ण भगवान के स्तोत्र :-

श्री कृष्णाष्टकम् 47

अच्युताष्टकम् 52

श्रीविष्णुषट्पदी 57

प्रातः स्मरण स्तोत्र 60

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

श्री गणेश मंत्र

गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

श्री गणेशपञ्चरत्नम्

मुदा करात्त मोदकं सदा विमुक्ति साधकम् ।
कलाधरावतंसकं विलासिलोक रक्षकम् ।
अनायकैक नायकं विनाशितेभ दैत्यकम् ।
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ 1 ॥

मैं श्री गणेश भगवान को बहुत ही विनम्रता के साथ अपने हाथों से मोदक प्रदान (समर्पित) करता हूं, जो मुक्ति के दाता- प्रदाता हैं। जिनके सिर पर चंद्रमा एक मुकुट के समान विराजमान है, जो राजाधिराज हैं और जिन्होंने गजासुर नामक दानव हाथी का वध किया था, जो सभी के पापों का आसानी से विनाश कर देते हैं, ऐसे गणेश भगवान जी की मैं पूजा करता हूं॥

Meaning:- (I salute God Vinayaka/Ganesh) The one who joyfully holds sweet modaka in his hand and who always gives salvation to his devotees. The one who wears the moon as an ornament and the protector of all the worlds. The one who acts as a guide/leader to the destitute or helpless people, the destroyer of the elephant-faced demon (Gajasura). The one who removes the bad and inauspicious things in one's lives, I bow to you, the God Vinayaka

नतेतराति भीकरं नवोदितार्क भास्वरम् ।
नमत्सुरारि निर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम् ।
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ 2 ॥

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

मैं उन परात्पर भगवान (गणेश) का निरन्तर आश्रय लेता हूँ जो उद्दंड, शठ और कपटी लोगों के लिए भयावह हैं। जो उषा काल के सूर्य की तरह प्रकाशवान हैं, जिनको सभी राक्षस और देवता नमन करते हैं, जो अपने भक्तों का समस्त आपदाओं से उद्धार करते हैं। वे भगवान गणेश देवों के स्वामी, निधिनिधान, गजेश्वर, गनेश्वर, परमेश्वर हैं।

Meaning:- (I bow to the God Ganesha), The one who induces fear to the people with dishonest and arrogance, the one who shines like a rising sun. I pray to the one who destroys the enemies of the gods and who frees and uplift his devotees from the obstacles. O' Ganesha, the leader of gods (Suras), the leader of wealth, the elephant-faced god and the Chief of celestial attendants (Ganas). The one who is like God Maheswara and always offers protection to the devotees who approached him.

समस्त लोक शङ्करं निरस्त दैत्य कुञ्जरम् ।
दरेतरोदरं वरं वरेभ वक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम् ।
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ 3 ॥

मैं उन तेजस्वी देव के लिए नमस्कार करता हूँ जो सारे संसार के लिए शुभकारी हैं , जो गजासुर दैत्य (दानवी शक्तियों) को परास्त करने वाले हैं, जो लंबोदर हैं, वरदाता गजानन हैं, जो सनातन हैं , अक्षर, अच्युत, निर्विकार हैं, कृपालु, क्षमाशील, आनंददाता, यशदाता और विवेक बुद्धि प्रदान करने वाले हैं।

Meaning:- 3.1: I bow to the God Ganesha, who gives auspiciousness to all the worlds, and Who Removes the Mighty (inner) Demons,
3.2: Whose Huge Body (Stomach) signifies Prosperity and Boon-Giving and Whose Most Excellent Face (elephant like face) reflects His Imperishable Nature.
3.3: Who Showers Grace (Kripakara), Who Showers Forgiveness (Kshamakara), Who Showers Joy (Mudakara) and who Showers Glory (Yashaskara) to His Devotees,
3.4: Who Bestows Intelligence and Wisdom (Manaskara) to those Who Salute Him with Reverence; I Salute His Shining Form.

अकिञ्चनार्ति मार्जनं चिरन्तनोक्ति भाजनम् ।
पुरारि पूर्व नन्दनं सुरारि गर्व चर्वणम् ।
प्रपञ्च नाश भीषणं धनञ्जयादि भूषणम् ।
कपोल दानवारणं भजे पुराण वारणम् ॥ 4 ॥

मैं उन आदि गजानन की शरण लेता हूँ जिनके कपोलों पर मद टपक रहा है, जो दीन दुःखियों की विपत्तियों को मिटाने वाले हैं, वेद वाक्यों में जिका वर्णन है, जो भगवान शिव के पुत्र हैं, जो देवों के शत्रु दानवों के गर्व को चूर करने में हर्षित होते हैं, जो मायामय मिथ्या जगत का नाश करने में अत्यंत भीषण हैं और धनंजय के आदि भूषण हैं।

Meaning:- 4.1: (Salutations to Sri Vinayaka) Who Wipes out the Sufferings of the Destitutes who take His Refuge; Who is the Receptacle of the Words of Praises of the Ancients,
4.2: Who is the Former Son (the latter being Kartikeya) of the Enemy of Tripurasuras (i.e. Lord Shiva), and Who Chews down the Pride and Arrogance of the Enemies of the Devas,
4.3: Who wields Terrible Power to Destroy the delusion of the Five Elements constituting the World (from the mind of His Devotees); Who Himself is Adorned with the Powers (behind the Five Elements) like Fire etc,
4.4: From Whose Cheeks flow down the Juice of Grace; Salutations to Him Whose Praise similarly flows down like Juice from the Puranas.

नितान्तकान्तिदन्तकान्तिमन्तकान्तिकात्मजम् ।
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम् ।
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम् ॥ 5 ॥

मैं उन एकदंत गजानन का सदा एकनिष्ठ ध्यान करता हूँ जो अपने एकदंत की कान्ति से अत्यंत मनोहारी हैं, जो अंतक का नाश करने वाले भगवान शिव के पुत्र हैं, जिनका रूप अचित्य है, जो अनंत हैं और जो विघ्नविनाशक हैं। वे योगियों के हृदयों के भीतर सदा निवास करते हैं।

Meaning:- 5.1: (Salutations to Sri Vinayaka) Whose Beautiful Form of Ekadanta is very much Dear to His Devotees, and Who is the Son of the One (referring to Lord Shiva) Who Put an End to (i.e. restrained) Antaka (i.e. Yama).
5.2: Whose essential Form is Inconceivable and without any Limit, and which Cuts through the Obstacles of His Devotees,
5.3: Who Continually Abides in the Cave of the Heart of the Yogis.
5.4: I Continually Reflect upon Him, the Ekadanta (another name of Sri Vinayaka).

महागणेश पञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं ।
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम् ।
समाहितायु रष्टभूति मभ्युपैति सोऽचिरात् ॥ 6 ॥

जो पुरुष हृदय में श्री गणेश का स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक इस 'श्री गणेशपञ्चरत्नम्' स्तोत्र का निरंतर प्रातःकाल में भली भांति जप करता है, उसे शीघ्र ही आरोग्य, निर्दोषत्व, सत्साहित्य में उपलब्धि, सुपुत्रलाभ, लम्बी आयु और आठों विभूतियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

Meaning:- 6.1: (Salutations to Sri Vinayaka) Those who Read the Great Ganesha Pancharatnam (five Jewels in praise of Sri Ganesha) with Devotion ...
6.2: ... and Utter this in the Early Morning Contemplating on Sri Ganeshvara in their Hearts ...
6.3: ... will get Free from Diseases and Vices, will get Good Spouses and Good Sons, ...
6.4: ... and with it He will get Long Life and the Eight Powers soon

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥1 ॥

अर्थ – हे आदिदेव भास्कर!(सूर्य का एक नाम भास्कर भी है) आपको प्रणाम है, आप मुझ पर प्रसन्न हों, हे दिवाकर! आपको नमस्कार है, हे प्रभाकर! आपको प्रणाम है।

Meaning:- 1.1: (Salutations to Sri Suryadeva) My Salutations to You O Adideva (the first God), Please be gracious to me O Bhaskara (the Shining One),
1.2: My Salutations to You, O Divakara (the maker of the Day), and again Salutations to You, O Prabhakara (the maker of Light).

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥2 ॥

अर्थ – सात घोड़ों वाले रथ पर आरुढ़, हाथ में श्वेत कमल धारण किये हुए, प्रचण्ड तेजस्वी कश्यपकुमार सूर्य को मैं प्रणाम करता/करती हूँ।

Meaning:- 2.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You are mounted on a Chariot driven by seven Horses, You are excessively Energetic and the Son of sage Kashyapa,
2.2: You are the Deva Who holds a White Lotus (in Your Hand); I Salute You, O Suryadeva.

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥3 ॥

अर्थ – लोहितवर्ण रथारुढ़ सर्वलोकपितामह महापापहारी सूर्य देव को मैं प्रणाम करता/करती हूँ।

Meaning:- 3.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You are Reddish in colour, and mounted on a Chariot; You are the Grandfather of all persons (being the Adideva, the first God),
3.2: You are the Deva Who removes great Sins from our minds (by Your Illumination); I Salute You, O Suryadeva.

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥4 ॥

अर्थ – जो त्रिगुणमय ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप हैं, उन महापापहारी महान वीर सूर्यदेव को मैं नमस्कार करता/करती हूँ।

Meaning:- 4.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You are the Heroic One having the Three Gunas of Brahma, Vishnu and Maheswara (i.e. Qualities of Creation, Sustenance and Dissolution),

4.2: You are the Deva Who removes great Sins from our minds (by Your Illumination); I salute You, O Suryadeva.

बृंहितं तेज:पुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥5॥

अर्थ – जो बढ़े हुए तेज के पुंज हैं और वायु तथा आकाशस्वरुप हैं, उन समस्त लोकों के अधिपति सूर्य को मैं प्रणाम करता/करती हूँ।

Meaning:- 5.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You are a massively Enlarged Mass of Fiery Energy, which (i.e. that energy) pervades everywhere like Vayu (Air) and Akasha (Sky),

5.2: You are the Lord of all the Worlds, I salute You, O Suryadeva.

बन्धूकपुष्पसंकाशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥6॥

अर्थ – जो बन्धूक (दुपहरिया) के पुष्प समान रक्तवर्ण और हार तथा कुण्डलों से विभूषित हैं, उन एक चक्रधारी सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता/करती हूँ।

Meaning:- 6.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You appear beautiful like a Red Hibiscus Flower and You are adorned with Garland and Ear-Rings,

6.2: You are the Deva Who holds a Discus in one Hand; I salute You, O Suryadeva.

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेज:प्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥7॥

अर्थ – महान तेज के प्रकाशक, जगत के कर्ता, महापापहारी उन सूर्य भगवान को मैं नमस्कार करता/करती हूँ।

Meaning:- 7.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You, O Suryadeva are the Agent behind the World (i.e. Who gives energy for action to everyone), You enliven others with great Energy (and thus imparting the ability to work),
7.2: You are the Deva Who removes great Sins from our minds (by Your Illumination); I salute You, O Suryadeva.

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥8 ॥

अर्थ – उन सूर्यदेव को, जो जगत के नायक हैं, ज्ञान, विज्ञान तथा मोक्ष को भी देते हैं, साथ ही जो बड़े-बड़े पापों को भी हर लेते हैं, मैं प्रणाम करता/करती हूँ।

Meaning:- 8.1: (Salutations to Sri Suryadeva) You, O Suryadeva are the Lord of the World, Who grants Understanding and Knowledge which leads to Liberation,
8.2: You are the Deva Who removes great Sins from our minds (by Your Illumination); I salute You, O Suryadeva.

इति श्रीशिवप्रोक्तं सूर्याष्टकं सम्पूर्णम् ।

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

श्री शिव मंत्र

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ॥

शरीर कपूर की तरह गोरा है, जो करुणा के अवतार है, जो शिव संसार के सार / मूल हैं। और जो महादेव सर्पराज को गले में हार के रूप में धारण किए हुए हैं, ऐसे हमेशा प्रसन्न रहने वाले भगवान शिव को अपने हृदय कमल में शिव-पार्वती को एक साथ नमस्कार करता हूँ।

॥ शिव प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥१॥

प्रातः काल मैं भगवान शिव का ध्यान करता हूँ जो देवताओं के देवता हैं तथा जीवन मरण के भय को दूर करने वाले हैं, जिन्होंने गङ्गा को अपने शीश पर धारण किया है, वृषभ जिनकी सवारी है और अंबिका के जो स्वामी हैं, जिनके दोनों हाथों में गदा और भाला है तथा दूसरे दोनों हाथों में वरदान देने और संसार के दुखों को दूर करने की शक्ति है।

Meaning:- 1.1 In the Early Morning, I Remember Sri Shiva,
Who Destroys the Fear of Worldly Existence and Who is the Lord of the Devas,
1.2 Who Holds River Ganga on His Head, Who has a Bull as His Vehicle and Who is the Lord of Devi Ambika,
1.3 Who has a Club and Trident in His two Hands, And confers Boon and Fearlessness with His other two Hands and Who is the Lord of the Universe,
1.4 Who is the Medicine to Destroy the Disease (of Delusion) of Worldly Existence and Who is the One without a second.

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥२॥

प्रातः मैं झुक कर भगवान शिव को नमस्कार करता हूँ जिनके शरीर का आधा भाग मां दुर्गा हैं और जो इस विश्व के रचयिता, रक्षक तथा विनाशक भी हैं। जो विश्व के भगवान हैं, अद्वितीय हैं, सांसार में सबके मनों मोहित करने वाले हैं, और संसार के दुखों व तापों को दूर करने के लिए औषधि के समान हैं।

Meaning:- 2.1 In the Early Morning, I Salute Sri Girisha (Shiva), Who has Devi Girija (Parvati) as Half of His Body,
2.2 Who is the Primordial Cause behind the Creation, Maintenance and Dissolution of the Universe,
2.3 Who is the Lord of the Universe and Who Conquers the World by His Charm,
2.4 Who is the Medicine to Destroy the Disease (of Delusion) of Worldly Existence and Who is the One without a second.

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥३॥

प्रातः मैं उन भगवान शिव की पूजा करता हूँ जो की एक अद्वितीय हैं, अनंत हैं, जो सबके आदिकारण हैं, जिन्हें केवल वेदांत द्वारा जाना जा सकता है, जो स्वयं पापरहित, पवित्र हैं, महानतम (परम) पुरुष हैं। तथा नाम आदि के भेद से रहित हैं, छः प्रकार के भावों से अर्थात जन्म, अस्तित्व, विकास, प्रौढ़ता, विनाश तथा मृत्यु से शून्य (रहित) हैं, और संसार के रोग (जन्म, मृत्यु, दुःख व पाप-ताप) को दूर करने वाली औषधि के समान हैं।

Meaning:- 3.1 In the Early Morning, I Worship Sri Shiva Who is the One without a second, Who is Boundless and Infinite and Who is Primordial,
3.2 Who is Known only by Understanding the Vedanta, Who is Sinless and Faultless, Who is the Primeval Original Source of the Universe and Who is the Great One,
3.3 Who is Free from the Differences of Names etc and Who is Without the Six Modifications (of Birth, Existence, Growth, Maturity and Death),
3.4 Who is the Medicine to Destroy the Disease (of Delusion) of Worldly Existence and Who is the One without a second.

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

॥ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

शिवपञ्चाक्षर स्तोत्र पंचाक्षरी मन्त्र नमः शिवाय पर आधारित है।

न – पृथ्वी तत्त्व का

म – जल तत्त्व का

शि – अग्नि तत्त्व का

वा – वायु तत्त्व का और

य – आकाश तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥

जिनके कण्ठ में सर्पों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अंगराग है और दिशाएँ ही जिनका वस्त्र हैं अर्थात् जो दिगम्बर हैं ऐसे शुद्ध अविनाशी महेश्वर 'न' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है ॥1 ॥

Meaning:- 1.1: (Salutations to Lord Shiva) Who has the most excellent of Snakes as His Garland, and Who has Three Eyes,
1.2: Whose Body is Coloured (i.e. Smeared) with Sacred Ashes and Who is the Great Lord,
1.3: Who is Eternal, Who is ever Pure and Who has the Four Directions as His Clothes (signifying that He is ever Free),
1.4: Salutations to that Shiva, Who is represented by syllable "Na",
The first syllable of the Panchakshara Mantra "Na-Ma-Shi-Va-Ya".

मन्दाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

गङ्गाजल और चन्दन से जिनकी अर्चना हुई है, मन्दार-पुष्प तथा अन्य पुष्पों से जिनकी भलिभाँति पूजा हुई है। नन्दी के अधिपति, शिवगणों के स्वामी महेश्वर 'म' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥

Meaning:- 2.1: (Salutations to Lord Shiva) Who is Worshipped with Waters of River Mandakini and Smeared with Sandal Paste,
2.2: Who is the Lord of Nandi and of the Ghosts and Goblins; and Who is the Great Lord,
2.3: Who is deeply Worshipped with Mandara (Arka) and many other Flowers,
2.4: Salutations to that Shiva, Who is represented by syllable "Ma",
The second syllable of the Panchakshara Mantra "Na-Ma-Shi-Va-Ya".

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥

जो कल्याणस्वरूप हैं, पार्वतीजी के मुखकमल को प्रसन्न करने के लिए जो सूर्यस्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करनेवाले हैं, जिनकी ध्वजा में वृषभ (बैल) का चिह्न शोभायमान है, ऐसे नीलकण्ठ 'शि' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥ 3 ॥

Meaning:- 3.1: (Salutations to Lord Shiva) Who is Auspicious and Who is like the Sun causing the Lotus-Face of Gauri (Devi Parvati) to Blossom,
3.2: Who is the Destroyer of the Sacrifice (Yagna) of Daksha (Sacrifice of Daksha),
3.3: Who has a Blue Throat and has a Bull as His Emblem,
3.4: Salutations to that Shiva, Who is represented by syllable "Shi",
The third syllable of the Panchakshara Mantra "Na-Ma-Shi-Va-Ya".

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य, मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥

वसिष्ठ मुनि, अगस्त्य ऋषि और गौतम ऋषि तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, ऐसे 'व' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥4॥

Meaning:- 4.1: (Salutations to Lord Shiva) Who is Worshipped by the Best and most Respected Sages like Vashistha, Pot-Born sage Agastya and Gautama ...
4.2: ... and also by the Devas, and Who is the Crown of the Universe,
4.3: Who has the Moon (Chandra), Sun (Arka) and Fire (Vaisvanara) as His Three Eyes,
4.4: Salutations to that Shiva, Who is represented by syllable "Va",
The fourth syllable of the Panchakshara Mantra "Na-Ma-Shi-Va-Ya".

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥

जिन्होंने यक्ष स्वरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक* है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, ऐसे दिगम्बर देव 'य' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है ॥5 ॥

Meaning:- 5.1: (Salutations to Lord Shiva) Who is the embodiment of Yagna {or Who assumed the incarnation of Yaksha} and Who bears the Matted Hairs,
5.2: Who has the Trident in His Hand and Who is Eternal,
5.3: Who is Divine, Who is the Shining One and Who has the Four Directions as His Clothes (signifying that He is ever Free),
5.4: Salutations to that Shiva, Who is represented by syllable "Ya",
The fifth syllable of the Panchakshara Mantra "Na-Ma-Shi-Va-Ya".

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥
जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर स्तोत्र का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त होता है और वहाँ शिवजी के साथ आनन्दित होता है।

Meaning:- 6.1: Whoever Recites this Panchakshara Stotram (Hymn in praise of the five syllables of Na-Ma-Shi-Va-Ya) near Shiva (Lingam),
6.2: Will Attain the Abode of Shiva and enjoy His Bliss.

शिव मानस पूजा स्तोत्र

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥

हे देव, हे दयानिधे, हे पशुपते, यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्न से विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरि आदि गन्ध से समन्वित चन्दन, जूही, चम्पा और बिल्वपत्रसे रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप – यह सब मानसिक [पूजोपहार] ग्रहण कीजिये।

Meaning:- 1.1: (O Pashupati, please accept my Mental Worship of You) I offer an Asanam (Seat) studded with Gems for You to Sit on; I Bathe You in Cool Waters from the Himalayas; and with Divine Clothes ...
1.2: ... decorated with various Gems, and with Marks of Sandal Paste of the Musk Deer (Kasturi), I Adorn Your Form,
1.3: I Offer You Flowers composed of Jaati (Jasmine) (Jaati) and Champaka (Magnolia) (Champaka), along with Bilva Leaves (Bilva), and wave Incense sticks ...
1.4: ... and Oil Lamp before You, O Deva, You Who are an Ocean of Compassion and the Pashupati (the Lord of the Pashus or beings); Please Accept my Offerings made within my Heart.

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥

मैंने नवीन रत्नखण्डोंसे जड़ित सुवर्णपात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दधिसहित पांच प्रकार का व्यंजन, कदलीफल, शरबत, अनेकों शाक, कपूरसे सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल तथा ताम्बूल – ये सब मनके द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं। हे प्रभो, कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये।

Meaning:- 2.1: (O Pashupati, please accept my Mental Worship of You) I Offer You Ghrita (Ghee or Clarified Butter) and Payasa (a sweet food prepared with Rice and

Milk) in a Golden Bowl studded with Nine types of Gems, ...
2.2: ... and then Offer Five types of different Food preparations, and a special preparation composed of Payas (Milk), Dadhi (Curd) and Rambhaphala (Plaintain),
2.3: For drinking I Offer You Tasteful Water scented with various Fruits and Vegetables; then I wave a piece of Lighted Camphor before You ...
2.4: ... and finally offer a Tambula (Betel Leaf) and complete my Food Offering; O Lord, please Accept my Food Offerings I created in my Mind through Devotional Contemplation.

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥

छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टांग प्रणाम, नानाविधि स्तुति – ये सब मैं संकल्पसे ही आपको समर्पण करता हूँ। हे प्रभु, मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये।

Meaning:- 3.1: (O Pashupati, please accept my Mental Worship of You) I Offer You a Canopy (Umbrella) for Cool Shade and with a Pair of hand Fans made of Chamara, I Fan You; I Offer You a Shining Clean Mirror (representing the Purity of Devotion in my Heart),
3.2: I fill the Place with Divine Songs and Dances accompanied by Music from Veena (a stringed musical instrument), Bheri (a kettle drum), Mridanga (a kind of drum) and Kaahala (a large drum),
3.3: In this Divine surroundings, I do Full Prostration (Sasthanga Pranam) before You and then Sing various Hymns in Your Praise; All these are by me ...
3.4: ... created in my Heart and Offered to You; O Lord, Please accept my Mental Worship.

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।

सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥

हे शम्भो, मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वतीजी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है, सम्पूर्ण विषयभोगकी रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है, मेरा चलना-फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं। इस प्रकार मैं जो-जो कार्य करता हूँ, वह सब आपकी आराधना ही है।

Meaning:- 4.1: O Lord, You are my Atma (Soul), Devi Girija (the Divine Mother) is my Buddhi (Pure Intellect), the Shiva Ganas (the Companions or Attendants) are my Prana and my Body is Your Temple,
4.2: My Interactions with the World are Your Worship and my Sleep is the State of Samadhi (complete absorption in You),
4.3: My Feet Walking about is Your Pradakshina (Circumambulation); all my Speech are Your Hymns of Praises,
4.4: Whatever work I do, all that is Your Aradhana (Worship), O Shambhu.

कर-चरण-कृतं वाक् कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्-क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥

हाथोंसे, पैरोंसे, वाणीसे, शरीरसे, कर्मसे, कर्णोंसे, नेत्रोंसे अथवा मनसे भी जो अपराध किये हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको हे करुणासागर महादेव शम्भो। आप क्षमा कीजिये। हे महादेव शम्भो, आपकी जय हो, जय हो।

Meaning:- 5.1: Whatever Sins have been Committed by Actions Performed by my Hands and Feet, Produced by my Speech and Body, Or my Works,
5.2: Produced by my Ears and Eyes, Or Sins Committed by my Mind (i.e. Thoughts),
5.3: While Performing Actions which are Prescribed (i.e. duties prescribed by tradition or allotted duties in one's station of life), As Well as All other Actions which are Not explicitly Prescribed (i.e. actions done by self-judgement, by mere habit, without much thinking, unknowingly etc); Please Forgive Them All,
5.4: Victory, Victory to You, O Sri Mahadeva Shambho, I Surrender to You, You are an Ocean of Compassion.

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्र

ॐ सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनं।
उज्जयिन्यां महाकालं ओमकारं ममलेश्वरं॥

सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैलम में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकारेश्वर में ममलेश्वर(अमलेश्वर),

Meaning:- 1.1: At Saurashtra is the Somanatha (Somanatha) and at Srishaila is the Mallikarjuna (Mallikarjuna),
1.2: At Ujjayini is the Mahakala (Mahakaleshwara) and at Omkara (Omkareshwar) is the Amaleshwara (or Mamaleshwara) (Omkareshwara),

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करं।
सेतुबंधे तू रामेशं नागेशं दारुकावने॥

परली में वैद्यनाथ, डाकिनी नामक क्षेत्र में भीमशंकर, सेतुबंध पर रामेश्वर, दारूकावन में श्री नागेश्वर,

Meaning:- 2.1: At Parli is the Vaidyanatha (Vaidyanatha) and at Dakini is the Bhimashankara (Bhimashankara),
2.2: At Setubandha is the Ramesha (Rameshwara) and at Darukavana is the Nagesha (Nageshwara),

वाराणस्यां तू विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमी तटे।
हिमालये तू केदारं धृष्णेशं तू शिवालये॥

वाराणसी में काशी विश्वनाथ, गोदावरी तट पर(गौतमी) त्र्यंबकेश्वर, हिमालय में केदारनाथ, शिवालय में धृष्णेश्वर का स्मरण करे,

Meaning:- 3.1: At Varanasi is the Vishwesha (Vishwanatha), and at the bank of river Gautami (Godavari) is the Tryambaka (Tryambakeshwara),
3.2: At Himalaya is the Kedara (Kedarnatha), and at Shivalaya is the Ghushmesha (Grishneshwara),

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

जो मनुष्य इस स्तोत्र का सायंकाल-प्रातःकाल-स्मरण करता है उसके सात जन्मों के पापों का विनाश हो जाता है।

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ १॥

जिनकी ब्रह्मा, विष्णु और सभी देवगणों के द्वारा अर्चना की जाती है , जो परम पवित्र, निर्मल, तथा सभी जीवों की मनोकामना को पूर्ण करने वाले हैं और जो लिग के रूप में चराचर जगत में स्थापित हुए हैं, जो संसार के संहारक है और जन्म और मृत्यु के दुःखों का विनाश करते हैं ऐसे भगवान आशुतोष को नित्य निरंतर प्रणाम है।

Meaning:- 1.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Adored by Lord Brahma, Lord Vishnu and the Gods, which is Pure, Shining, and well-Adorned, 1.2: And which Destroys the Sorrows associated with Birth (and human life). I Salute that Eternal Shiva Lingam.

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ २॥

भगवान सदाशिव जो मुनियों और देवताओं के परम आराध्य देव हैं, तथा देवों और मुनियों द्वारा पूजे जाते हैं, जो काम (वह कर्म जिसमे विषयासक्ति हो) का विनाश करते हैं, जो दया और करुणा के सागर हैं तथा जिन्होंने लंकापति रावण के अहंकार का विनाश किया था, ऐसे परमपूज्य महादेव के लिग रूप को मैं कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

Meaning:- 2.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Worshipped by the Gods and the Best of Sages, which Burns the Desires, which is Compassionate, 2.2: And which Destroyed the Pride of demon Ravana. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ३॥

लिङ्गमय स्वरूप जो सभी तरह के सुगन्धित इत्रों से लेपित है, और जो बुद्धि तथा आत्मज्ञान में वृद्धि का कारण है, शिवलिग जो सिद्ध मुनियों और देवताओं और दानवों सभी के द्वारा पूजा जाता है, ऐसे अविनाशी लिग स्वरुप को प्रणाम है।

Meaning:- 3.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is beautifully Smeared with Various Fragrant pastes, which is the Cause behind the Elevation of a person's (Spiritual) Intelligence and Discernment,
3.2 And which is Praised by the Siddhas, Devas and the Asuras. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४

लिङ्गरुपी आशुतोष जो सोने तथा रत्नजडित आभूषणों से सुसज्जित हैं , जो चारों ओर से सर्पों से घिरे हुए हैं, तथा जिन्होंने प्रजापति दक्ष (माता सती के पिता) के यज्ञ का विध्वंस किया था, ऐसे लिङ्गस्वरूप श्रीभोलेनाथ को बारम्बार प्रणाम।

Meaning:- 4.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Decorated with Gold and other Precious Gems, which is Adorned with the Best of the Serpents Wrapped around it,
4.2: And which Destroyed the Grand Sacrifice (Yajna) of Daksha. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

कुङ्कमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५॥

देवों के देव जिनका लिङ्गस्वरुप कुङ्कम और चन्दन से सुलेपित है और कमल के सुंदर हार से शोभायमान है, तथा जो संचित पापकर्म का लेखा-जोखा मिटने में सक्षम है, ऐसे आदि-अनंत भगवान शिव के लिङ्गस्वरूप को मैं नमन करता हूँ।

Meaning:- 5.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Anointed with Kumkuma (Saffron) and Chandana (Sandal Paste), which is Beautifully Decorated with Garlands of Lotuses,
5.2: And which Destroys the Accumulated Sins (of several lives). I Salute that Eternal Shiva Lingam.

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ६॥

जो सभी देवताओं तथा देवगणों द्वारा पूर्ण श्रृद्धा एवं भक्ति भाव से परिपूर्ण तथा पूजित है, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी है, ऐसे लिङ्गस्वरूप भगवान शिव को प्रणाम है।

Meaning:- 6.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Worshipped and Served by the Group of Devas (Gods) with True Bhava (Emotion, Contemplation) and Bhakti (Devotion),
6.2: And which has the Splendour of Million Suns. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ७॥

जो पुष्प के आठ दलों (कलियाँ) के मध्य में विराजमान है, जो सृष्टि में सबके सृजन के परम कारण हैं, और जो आठों प्रकार की दरिद्रता का हरण करने वाले ऐसे लिङ्गस्वरूप भगवान शिव को मैं प्रणाम करता हूँ।

Meaning:- 7.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Surrounded by Eight-Petalled Flowers, which is the Cause behind All Creation,
7.2: And which Destroys the Eight Poverties. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ८॥

जो देवताओं के गुरुजनों तथा सर्वश्रेष्ठ देवों द्वारा पूजनीय है, और जिनकी पूजा दिव्य-उद्यानों के पुष्पों से कि जाती है, तथा जो परमब्रह्म है जिनका न आदि है और न ही अंत है ऐसे अनंत अविनाशी लिगस्वरूप भगवान भोलेनाथ को मैं सदैव अपने हृदय में स्थित कर प्रणाम करता हूँ।

Meaning:- 8.1: (I Salute that Eternal Shiva Lingam) Which is Worshipped by the Preceptor of Gods (Lord Brihaspati) and the Best of the Gods, which is Always Worshipped by the Flowers from the Celestial Garden,
8.2: Which is Superior than the Best and which is the Greatest. I Salute that Eternal Shiva Lingam.

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

वेदसारशिवस्तवः

पशूनां पति पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्ति वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारि महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥१॥

जो सम्पूर्ण प्राणियोंके रक्षक हैं, पापका ध्वंस करनेवाले हैं, परमेश्वर हैं, गजराजका चर्म पहने हुए हैं तथा श्रेष्ठ हैं और जिनके जटाजूटमें श्रीगंगाजी खेल रही हैं, उन कामारि एकमात्र श्रीमहादेवजीका मैं स्मरण करता हूँ।

Meaning:- 1.1: (I meditate on Him) Who is the Lord of the Living Beings (Pashus), Who destroys our Sins, and Who is the Transcendental God,
1.2: Who wears the Hide of the best of Elephants, and Who is Himself the Best,
1.3: From Whose Matted Hairs is spurting out the holy Waters of the great River Ganga,
1.4: On that Mahadeva only (with one-pointed Mind) I Meditate, the One Who is the Enemy of Smara (Kamadeva, representing desires).

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम् ।
विरूपाक्षमिन्दूर्क वह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥२॥

चन्द्र, सूर्य और अग्नि – तीनों जिनके नेत्र हैं, उन विरूपनयन महेश्वर, देवेश्वर, देवदुःखदलन, विभु, विश्वनाथ, विभूतिभूषण, नित्यानन्दस्वरूप, पञ्चमुख भगवान् महादेवकी मैं स्तुति करता हूँ।

Meaning:- 2.1: (I meditate on Him) Who is the Great Lord (Mahesha), Who is the Lord of the Devas (Suresha) and Who removes the Afflictions of the Devas,
2.2: Who is the All-Pervading Lord of the Universe (Vishwanatha) and Whose Body is adorned with Sacred Ashes (Vibhuti),
2.3: Whose Unique Eyes consists of the Triad of the Moon (Indu), Sun (Arka) and Fire (Vahni),
2.4: I Extol that Ever-Blissful Lord Who has Five Faces (Pancha Vaktra).

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥३॥

जो कैलाशनाथ हैं, गणनाथ हैं, नीलकण्ठ हैं, वृषभ (बैल) पर सवार हैं, अगणित रूपवाले हैं, संसारके आदिकारण हैं, प्रकाशस्वरूप हैं, शरीरमें भस्म लगाये हुए हैं और श्रीपार्वतीजी जिनकी अर्द्धांगिनी हैं, उन पञ्चमुख महादेवजीको मैं भजता हूँ।

Meaning:- 3.1: (I meditate on Him) Who is the Lord of the (Kailasha) Mountain (Girisha), Who is the Lord of the Celestial Attendants (Ganesha) and in Whose Throat is Blue-Colored (due to Poison),
3.2: Who is mounted on the king of Bulls (Nandi), and Whose Forms are innumerable,
3.3: Who is Existence Itself shining as the underlying Consciousness (Prakasha) (internally), and Whose Body is Adorned with Sacred Ashes (externally),
3.4: Who is the Consort of Devi Bhavani; I Worship that Lord with Five Faces (Pancha Vaktra).

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥४॥

हे पार्वतीवल्लभ महादेव! हे चन्द्रशेखर! हे महेश्वर! हे त्रिशूलिन्! हे जटाजूटधारिन्! हे विश्वरूप! एकमात्र आप ही जगत्में व्यापक हैं। हे पूर्णरूप प्रभो! प्रसन्न होइये, प्रसन्न होइये।

Meaning:- 4.1: O Shambhu (Giver of Happiness), the Beloved of Shivaa (Devi Parvati); O the One with the Half-Moon on His Head,
4.2: O the Great Master (Maheshana) holding the Trident (in His Hand) and bearing the Matted Hairs (on His Head),
4.3: You are the One Who pervades the entire Universe; And Whose Form is the Universe Itself (Vishwarupa),
4.4: Be Pleased with us, be Pleased with us, O Lord, Whose Form is the Fullness (of Consciousness); (Be Pleased with us and make us merge in Your Fullness).

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥५॥

जो परमात्मा हैं, एक हैं, जगत्के आदिकारण हैं, इच्छारहित हैं, निराकार हैं और प्रणवद्वारा जाननेयोग्य हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण विश्वकी उत्पत्ति और पालन होता है और फिर जिनमें उसका लय हो जाता है उन प्रभुको मैं भजता हूँ।

Meaning:- 5.1: (I meditate on Him) Who is the One Transcendental Consciousness which is the Primeval Seed of the Universe,
5.2: Who is without any Desire (Attaching Him to anything) (Niriha), Who is without any Form (Binding Him to anything) (Nirakara), and Who is known by meditating on the Omkara,
5.3: From Whom is Created the Universe, by Whom is Sustained the Universe,
5.4: I Worship that Lord, in Whom finally the whole Universe Merges.

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर् न चाकाश आस्ते न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतो न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्ति तमीडे ॥६॥

जो न पृथ्वी हैं, न जल हैं, न अग्नि हैं, न वायु हैं और न आकाश हैं; न तन्द्रा हैं, न निद्रा हैं, न ग्रीष्म हैं और न शीत हैं तथा जिनका न कोई देश है, न वेष है, उन मूर्तिहीन त्रिमूर्तिकी मैं स्तुति करता हूँ।

6.1: Neither by Earth (Bhumi), nor by Water (Apah), neither by Fire (Vahni), nor by Wind (Vayu), ...
6.2: ... neither also by Space is His presence limited;
Similarly neither by Lassitude (Tandra), nor by Sleep (Nidra) (can He be realized),
6.3: Neither by Summer (Grishma), nor by Winter (Shita) (is He constrained);
Similarly neither by Place (Desha), nor by Dress (Vesha) (can He be restrained),
6.4: And nor of Whom there is an (exclusive) Image (Murti); I Extol that Trimurti (the Cosmic presence behind Creation, Sustenance and Dissolution).
Then Who is He? The next verse tells about that.

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥७॥

जो अजन्मा हैं, नित्य हैं, कारणके भी कारण हैं, कल्याणस्वरूप हैं, एक हैं, प्रकाशकोंके भी प्रकाशक हैं, अवस्थात्रयसे विलक्षण हैं, अज्ञानसे परे हैं, अनादि और अनन्त हैं, उन परमपावन अद्वैतस्वरूपको मैं प्रणाम करता हूँ ।

Meaning:- 7.1: He is without Birth (i.e. He did not have a beginning) (Aja), He is Eternal (i.e. He is eternally existing) (Shasvata) and He is the Primal Cause behind all the Causes (Karana Karananam),
7.2: He is Auspicious (Shivaa), He is One (without a second) (Kevalam), He is the

(internal) manifesting Light (of Consciousness) (Bhasaka) behind all the (external) manifesting Lights (of Appearances),
7.3: He is Turiya (Super-Conscious state), beyond all Ignorance, and without any Beginning and End,
7.4: I take Refuge in that Transcendental Purity, Who is beyond all Dualities.

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥८॥

हे विश्वमूर्ते! हे विभो! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे चिदानन्दमूर्ते! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे तप तथा योगसे प्राप्तव्य प्रभो! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे वेदवेद्य भगवन्! आपको नमस्कार है, नमस्कार है।

Meaning:- 8.1: Salutations to You, Salutations to You, O the All-Pervading One (Vibhu), Whose Form is the whole Universe (Vishwamurti),
8.2: Salutations to You, Salutations to You, O the One Who is the embodiment of the Bliss of Consciousness (Cidananda),
8.3: Salutations to You, Salutations to You, Who is attained by Tapas (Penance) and Yoga,
8.4: Salutations to You, Salutations to You, Who is attained by the Knowledge of the Shrutis (Vedas).

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥९॥

हे प्रभो! हे त्रिशूलपाणे! हे विभो! हे विश्वनाथ! हे महादेव! हे शम्भो! हे महेश्वर! हे त्रिनेत्र! हे पार्वतीप्राणवल्लभ! हे शान्त! हे कामारे! हे त्रिपुरारे! तुम्हारे अतिरिक्त न कोई श्रेष्ठ है, न माननीय है और न गणनीय है।

Meaning:- 9.1: O Lord (Prabhu), O the One with Trident in His Hand (Shulapani), O the All-Pervading One (Vibhu), O the Lord of the Universe (Vishwanatha),
9.2: O the great God (Mahadeva), O the One Who causes Happiness to All (Shambhu), O the great Lord (Mahesha), the One with Three Eyes (Trinetra),
9.3: The Beloved of Devi Parvati (Shivaa Kanta), an embodiment of Peace (Shanta), the

One Who was an Enemy of Kama (Smarari) and Tripura (Purari),
9.4: O Lord, Apart from You there is no Other (for me) to
be Wished for, Venerated and Considered (for Worship).

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥१०॥

हे शम्भो! हे महेश्वर! हे करुणामय! हे त्रिशूलिन्! हे गौरीपते! पशुपते! हे पशुबन्धमोचन! हे काशीश्वर! एक तुम्हीं करुणावश इस जगत्की उत्पत्ति, पालन और संहार करते हो; प्रभो! तुम ही इसके एकमात्र स्वामी हो।

Meaning:- 10.1: O Shambhu, O Mahesha, O the Compassionate One (Karunamaya)
with Trident in Hand (Shulapani),
10.2: O the Consort of Gauri (Gauripati), the Lord of All Beings (Pashupati)
Who severe their Bondages (Pashupasha Nashi),
10.3: O the Lord of Kashi (Kashipati); By Your Compassion (and Will), this Universe,
You alone ...
10.4: ... Destroy, Protect and Create, O You are the Maheshwara (the Great God).

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥११॥

हे देव! हे शंकर! हे कन्दर्पदलन! हे शिव! हे विश्वनाथ! हे ईश्वर! हे हर! हे चराचरजगद्रूप प्रभो! यह लिगस्वरूप समस्त जगत् तुम्हींसे उत्पन्न होता है, तुम्हींमें स्थित रहता है और तुम्हींमें लय हो जाता है।

Meaning:- 11.1: From You the whole Universe comes into being,
O Deva; Existence (Itself comes into being), O Smarari,
11.2: (And then) In You abides the whole Universe (after coming into being), O gracious
Vishwanatha,
11.3: (Finally) In You goes this whole Universe during Dissolution (Laya), O Lord of this
Universe,
11.4: You Who are of the nature of Linga (symbolized by Linga) (Lingatmaka), You
Who take away Afflictions (Hara); You Who are of the form of the World with all
its Moving and Non-Moving beings (Caracara Vishwarupin); I ever Meditate on You.

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

॥ श्रीदुर्गासप्तश्लोकी (अम्बा स्तुति) ॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारायण ऋषिः । अनुष्टुपादीनि छन्दांसि ।
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थ पाठे विनियोगः ॥

इस दुर्गासप्तश्लोकी स्तोत्र के ऋषि भगवान् नारायण हैं, श्लोक के अनुष्टुप छंद है, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती इस स्तोत्र के मुख्य देवता हैं और माँ दुर्गा की प्रीति अर्थ के लिये इस तोत्र का हम विनियोग करते हैं।

Meaning:- 1: Om, this Sri Durga Saptashloki Stotra Maha Mantra ...
2: ... which is composed by Sri Narayana Rishi, is in Anusthup and other Metres.
3: This Maha Mantra is Dedicated to the Goddesses Sri Mahakali, Sri Mahalakshmi and Sri Mahasaraswati,
4: This Maha Mantra is Meant to be Recited to Please the Jagadamba (Mother of the Universe).

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥

भगवती देवी महामाया बड़े बड़े ज्ञानियों के चित्त को भी बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं।

Meaning:- 1.1: (Salutations to You, O Jagadamba) Even the consciousness of the Jnanis (Spiritually-Evolved souls) are part of You, O Devi Bhagavati, for You, ...
1.2: ... make them attract towards Moha (Delusion) by Your Power, when You the Mahamaya Will so (such is Your Power and Divine Play).

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ॥२॥

हे माँ दुर्गा आपके समरण मात्र से ही आप प्रसन्न होकर समस्तप्राणियों के दुःख-दारिद्र व भाय का विनाश कर देती हो, साथ ही आप भक्तों को स्वास्थ्य प्रदान करती हो, परमकल्याणमयी बुद्धिप्रदान

करती हो। हे देवी! आपके अतिरिक्त आँय कौन है जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दया से द्रवीभूत रेहता है?

Meaning:- 2.1: (Salutations to You, O Jagadamba) O Devi Durga,
Whoever Remembers You with Devotion, You Remove the endless Fears of Samsara from the mind of that Person,
2.2: (And) Whoever Meditates on You in their Heart, You bestow exceeding Auspiciousness (which is beyond description),
2.3: O Mother, Apart from You, Who else can destroy Poverty, Sorrow and Fear from our Lives? (which appears to be a never-ending cycle),
2.4: Your Heart is always full of Compassion for rendering all sorts of Help to Your Devotees.

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥

हे नारायणी आप सभी मंगलों को भी प्रदान करनेवाली मंगलमयी हो, कल्याण दायिनी शिवा हो सभी पुरुषार्थों को सिद्धकरनेवाली हो, हे शरणागत वतस्ला त्रिनेत्रा पार्वती आप ही हो।

Meaning:- 3.1: (Salutations to You, O Jagadamba) O
the Auspiciousness in all the Auspicious, Auspiciousness Herself and Fulfiller of all the Objectives of the Devotees (Purusharthas - Dharma, Artha, Kama and Moksha) ...,
3.2: O the giver of Refuge, with Three Eyes (spanning the Past, Present and Future; and containing within them the Sun, Moon and the Fire), the Gauri (Shining One); Salutations to You O Narayani.

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥४॥

शरणागत हुए दीन-दुःखियों एवं आर्तजनों की रक्षा में निरत और सबकी पीड़ा को हरनेवाली नारायणी मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

Meaning:- 4.1: (Salutations to You, O Jagadamba) You are Intent upon Rescuing the Distressed and the Oppressed who take Your Refuge whole-heartedly, ...
4.2: ... and Remove All their Sufferings; Salutations to You O Narayani.

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोऽस्तु ते ॥५॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सभी शक्तियों से संपन्न दिव्य माँ, भगवती स्वरूपा हे दुर्गा देवी सभी प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करो, हम आपको नमस्कार करते हैं।

Meaning:- 5.1: (Salutations to You, O Jagadamba) You Exist in All Forms of All Gods, and You are the Possessor of All Powers,
5.2: O Devi, Please Protect us from all Fears; Salutations to You, O Durga Devi.

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥

हे देवी! तुम प्रसन्न होकर सभी रोगों का विनाश कर देती हो, और कुपित होनेपर सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो मनुष्य आपकी शरण में आता है उस पर तो विपत्ति आती ही नहीं, वो दूसरों को भी आश्रय देता है।

Meaning:- 6.1: (Salutations to You, O Jagadamba) When You are Pleased with our Devotion, You Destroy to the very Root our worldly Diseases (our inner demons); but if You are Displeased with us (for any reason), You will
destroy All our Aspirations and Wishes (i.e. they will remain ever unfulfilled),
6.2: By Your Refuge, Men cannot Go Astray and no Misfortunes can finally overcome them; Your Refuge Indeed is my final Refuge when I Depart from this World.

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥७॥

हे दुर्गा! आप इसी प्रकार तीनों लोकों की बाधाओं को शांत करो और हमारे सभी शत्रुओं का विनाश करो।

Meaning:- 7.1: (Salutations to You, O Jagadamba) O Goddess of All the Three Worlds, when You are Pleased, You Mitigate All our Distresses.
7.2: Thus, in this Manner, Your Grace Works to Destroy our Inner Enemies.

देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्

न मत्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

हे मातः ! मैं तुम्हारा मन्त्र, यंत्र, स्तुति, आह्वान, ध्यान, स्तुतिकथा, मुद्रा तथा विलाप कुछ भी नहीं जानता, परन्तु सब प्रकार के क्लेशों को दूर करने वाला आपका अनुसरण करना ही जानता हूँ।

Meaning:- 1.1: (O Mother) Neither Your Mantra, Nor Yantra (do I know);
And Alas, Not even I know Your Stuti (Eulogy),
1.2: I do not know how to Invoke You through Dhyana (Meditation); (And Alas), Not even I know how to simply recite Your Glories (Stuti-Katha),
1.3: I do not know Your Mudras (to contemplate on You); (And Alas), Not even I know how to simply Cry for You,
1.4: However, one thing I know (for certain); By following You (somehow through rememberance however imperfectly) will take away all my Afflictions (from my Mind),

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

सबका उद्धार करने वाली हे करुणामयी माता ! तुम्हारी पूजा की विधि न जान्ने के कारण, धन के आभाव में, आलस्य से और उन विधियों को अच्छी तरह न कर सकने के कारण, तुम्हारे चरणों की सेवा करने में जो भूल हुई हो उसे क्षमा करो, क्योंकि पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं होती।

Meaning:- 2.1: (O Mother) Due to Ignorance of the Vidhis (Injunctions of Worship), and due to lack of Wealth, as well as due to my Indolent (Lazy) nature, ...
2.2: ... (Since) It was not possible for me to serve Your Lotus Feet; there have been Failures on the performance of my duties (I admit that),

2.3: (But) All these are pardonable (by You), O Mother; because You are the Saviour of All, O Shivaa (Auspicious Mother),
2.4: There can be Kuputra (fallen disobedient son turning away from Mother), but there can never be Kumata (Mother turning away from son permanently),

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

माँ ! भूमण्डल में तुम्हारे सरल पुत्र अनेको है पर उनमें एक मैं विरला ही बड़ा चंचल हूँ, तो भी हे शिवे ! मुझे त्याग देना तुम्हे उचित नहीं, क्योंकि पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं होती।

Meaning:- 3.1: (O Mother) In this World, there are many many Sons of Yours who are Simple-minded,
3.2: However, among them I am a rare Son of Yours who is Restless,
3.3: Because of this only, it is not proper for You to forsake me O Shivaa (Auspicious Mother),
3.4: (Because) There can be Kuputra (fallen disobedient son turning away from Mother), but there can never be Kumata (Mother turning away from son permanently),

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

हे जगदम्ब ! हे मातः ! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा नहीं की अथवा तुम्हारे लिए प्रचुर धन भी समर्पण नहीं किया तो भी मेरे ऊपर यदि तुम ऐसा अनुपम स्नेह रखती हो तो यह सच ही है की क्योंकि पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं होती।

Meaning:- 4.1: O Jaganmata (Mother of the World), O Mother, I have never Served Your Lotus Feet,
4.2: Neither have I offered, O Devi, abundant Wealth at Your Lotus Feet (during

Worship),

4.3: Inspite of this, You have maintained Your Motherly Love towards me which is incomparable,

4.4: (Because) There can be Kuputra (fallen disobedient son turning away from Mother), but there can never be Kumata (Mother turning away from son permanently),

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥

हे गणेश जननी ! मैंने अपनी पचासी वर्ष से अधिक आयु बीत जाने पर विविध विधियों द्वारा पूजा करने से घबड़ा कर सब देवों को छोड़ दिया है, यदि इस समय तुम्हारी कृपा न हो तो मैं निराधार होकर किस की शरण में जाऊं?

Meaning:- 5.1: (O Mother) Letting go (i.e. Left or Never undertaking) the various Ritualistic Worship services of the Devas ...

5.2: ... by me, more than Eighty Five years of my life has passed,

5.3: Even at this moment (nearing death), if Your Grace do not descend, O Mother (Who is) of the form of Bliss-Consciousness, ...

5.4: ... Where will this Niralamba (one without any support) seek Refuge, O Lambodara Janani (Mother of Lambodara or Ganesha),

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

हे माता अपर्णे ! यदि तुम्हारे मंत्राक्षरों के कान में पड़ते ही चांडाल भी मिठाई के समान सुमधुरवाणी से युक्त बड़ा भारी वक्ता बन जाता है और महादरिद्र भी करोड़पति बन कर चिरकाल तक निर्भय विचरता है तो उसके जप का अनुष्ठान करने पर जपने से जो फल होता है, उसे कौन जान सकता है?

Meaning:- 6.1: (O Mother) A Swapaka (a Dog-Eater or Chandala) (from whose mouth nothing much comes out in terms of good speech) becomes Jalpaka (Talkative)

with Speech like a Madhupaka (from whose mouth good speech comes out like Honey) (by Your Grace),

6.2: A Ranka (Poor and Miserable) becomes Niratanka (Free from Fear) forever, and moves about having obtained Million Gold (by Your Grace),

6.3: O Aparna (another name of Devi Parvati), when Your Prayer (and Glory) enter one's Ear (and sits in the Heart), such is the Result,

6.4: (Then) Who among men can know, O Mother, the destiny which Your Holy Japa can unfold?

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

जो चिता का भस्म रमाए है, विष खाते है, दिगंबर रहते है, जटाजूट बांधे है, गले में सर्पमाला पहने है, हाथ में खप्पर लिए है, पशुपति और भूतों के स्वामी है, ऐसे शिवजी ने भी जो एकमात्र जगदीश्वर की पदवी प्राप्त की है, वह हे भवानि ! तुम्हारे साथ विवाह होने का ही फल है।

Meaning:- 7.1: (O Mother) (Lord Shankara), Who is smeared with Chitabhasma (Ashes from the Cremation Ground), Whose Food is the Poison, Whose Clothes are the Directions, ...

7.2: ... Who carry Matted Hairs on His Head, Who wear the Garland of the king of Snakes around His Neck; (Inspite of all this He is called) Pashupati (The Lord of the Pashus or Living Beings),

7.3: He carries a Begging Bowl of Skull in His Hand but is worshipped as Bhutesha (The Lord of the Bhutas or Beings) and got the title of Jagadisha Eka (One Lord of the Universe), ...

7.4: O Bhavani, all this is because of the result of Your Pani Grahana (Accepting Your Hand in Marriage),

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥

हे चंद्रमुखी माता ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, सांसारिक वैभव की भी लालसा नहीं है, विज्ञान तथा सुख की भी अभिलाषा नहीं है, इसलिए मैं तुमसे यही मांगता हूँ कि मेरी साड़ी आयु मृडानी, रुद्राणी, शिव-शिव, भवानी आदि नामो के जपते-जपते ही बीते।

Meaning:- 8.1: (O Mother) I do not have the desire for Moksha (Liberation); Neither have I the desire for Worldly Fortune,
8.2: Neither do I long for Worldly Knowledge, O Shashi Mukhi (The Moon-Faced One); I do not have the desire for enjoying the Worldly comforts again,
8.3: Henceforth I implore You, O Mother, May You direct my life towards (the rememberance of Your Names),
8.4: (The string of Your Holy Names) Mridani Rudrani Shiva Shiva Bhavani; May my future life be spent in performing Japa of Your Holy Names,

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

हे श्यामा! मैंने अनेकों उपचारों से तुम्हारी सेवा नहीं की (यही नहीं, इसके विपरीत) अनिष्ट चितन मेन में तत्पर अपने वचनों से मैंने क्या नहीं किया? (अर्थात अनेकों बुराइयाँ की हैं) फिर भी मुझ अनाथ पर यदि तुम कुछ कृपा रखती हो तो यह तुम्हें बहुत ही उचित है, क्योंकि तुम मेरी माता हो।

Meaning:- 9.1: (O Mother) I have not worshipped You as prescribed by tradition with various rituals,
9.2: (On the other hand) What rough thoughts did my mind not think and my speech utter?
9.3: O Shyama, inspite of this, if You indeed, to a little extent, to this orphan ...
9.4: ... have extended Your Grace, O Supreme Mother, It indeed only becomes You (i.e. is possible for You),

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

हे दुर्गे ! हे दयासागर माहेश्वरी ! जब मैं किसी विपत्ति में पड़ता हूँ तो तुम्हारा ही स्मरण करता हूँ, इसे तुम मेरी दुष्टता या छल कपट मत समझना, क्योंकि भूखे-प्यासे बालक अपनी माँ को याद किया करते हैं।

Meaning:- 10.1: (O Mother) I have sunk in Misfortunes and therefore remembering You now (which I never did before),
10.2: O Mother Durga, (You Who are) an Ocean of Compassion, ...
10.3: ... (Therefore) do not think of me as false (and my invocation as pretence),
10.4: (Because) When children are afflicted with Hunger and Thirst, they naturally remember their Mother (only),

जगदम्ब विचित्रमत्र कि परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

हे जगज्जननी ! मुझ पर तुम्हारी पूर्ण कृपा है, इसमें आश्चर्य ही क्या है? क्योंकि अनेक अपराधों से युक्त पुत्र को भी माता त्याग नहीं देती।

Meaning:- 11.1: O Jagadamba (Mother of the Universe), What is surprising in this!
11.2: The graceful Compassion of the (Blissful) Mother always remains fully filled,
11.3: (Because) Inspite of the son committing Mistakes after Mistakes,
11.4: The Mother never abandons the son,

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

हे महादेवी ! मेरे समान कोई पापी नहीं है और तुम्हारे समान कोई पाप नाश करने वाली नहीं है, यह जानकार जैसा उचित समझो, वैसा करो।

Meaning:- 12.1: (O Mother) There is no one as Fallen like me, and there is no one as Uplifting (by removing Sins) like You,
12.2: Considering thus, O Mahadevi, Please do whatever is proper (to save me).

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

भवानी अष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

हे भवानी! पिता, माता, संबंधी, भाई बहन, दाता, पुत्र, पुत्री, सेवक, स्वामी, पत्नी, विद्या और व्यापार – इनमें से कोई भी मेरा नहीं है, हे भवानी माँ! एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो, मैं केवल आपकी शरण हूँ।

Meaning:- 1.1: Neither the Father, nor the Mother; Neither the Relation and Friend, nor the Donor,
1.2: Neither the Son, nor the Daughter; Neither the Servant, nor the Husband,
1.3: Neither the Wife, nor the (worldly) Knowledge; Neither my Profession,
1.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

हे भवानी माँ, मैं जन्म-मरण के इस अपार भवसागर में पड़ा हुआ हूँ, भवसागर के महान् दुःखों से भयभीत हूँ। मैं पाप, लोभ और कामनाओं से भरा हुआ हूँ तथा घृणायोग्य संसारके (कुसंसारके) बन्धनों में बँधा हुआ हूँ। हे भवानी! मैं केवल तुम्हारी शरण हूँ, अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

Meaning:- 2.1: In this Ocean of Worldly Existence which is Endless, I am full of Sorrow and Very much Afraid,
2.2: I have Fallen with Excessive Desires and Greed, Drunken and Intoxicated,
2.3: Always Tied in the Bondage of this miserable Samsara (worldly existence),
2.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तंत्रं न च स्तोत्र-मन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥३॥

हे भवानी ! मैं न तो दान देना जानता हूँ और न ध्यानयोग मार्ग का ही मुझे पता है। तंत्र, मंत्र और स्तोत्र का भी मुझे ज्ञान नहीं है। पूजा तथा न्यास योग आदि की क्रियाओं को भी मै नहीं जानता हूँ। हे देवि ! हे माँ भवानी ! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो, मुझे केवल तुम्हारा ही आश्रय है।

Meaning:- 3.1: Neither do I know Charity, nor Meditation and Yoga,
3.2: Neither do I know the practice of Tantra, nor Hymns and Prayers,
3.3: Neither do I know Worship, nor dedication to Yoga,
3.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्ति लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्ति व्रतं वापि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥४॥

हे भवानी माता ! मै न पुण्य जानता हूँ, ना ही तीर्थों को, न मुक्ति का पता है न लय (ईश्वर के साथ एक होने) का। हे मा भवानी ! भक्ति और व्रत का भी मुझे ज्ञान नहीं है। हे भवानी ! एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो, अब केवल तुम्हीं मेरा सहारा हो।

Meaning:- 4.1: Neither do I Know Virtuous Deeds, nor Pilgrimage,
4.2: I do not know the way to Liberation, and with little Concentration and Absorption,
4.3: I know neither Devotion, nor Religious Vows; Nevertheless Oh Mother,
4.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥५॥

मैं कुकर्मी, कुसंगी (बुरी संगति में रहने वाला), कुबुद्धि (दुर्बुद्धि), कुदास(दुष्टदास) और नीच कार्यों में ही प्रवत्त रहता हूँ (सदाचार से हीन कार्य), दुराचारपरायण, कुत्सित दृष्टि (कुदृष्टि) रखने वाला और सदा दुर्वचन बोलने वाला हूँ। हे भवानी! मुझ अधम की एकमात्र तुम्हीं गति हो, मुझे केवल तुम्हारा ही आश्रय है।

Meaning:- 5.1: I performed Bad Deeds, associated with Bad Company, cherished Bad Thoughts, have been a Bad Servant,
5.2: I did not perform my Traditional Duties, deeply engaged in Bad Conducts,
5.3: My eyes Saw with Bad Intentions, tongue always Spoke Bad Words,
5.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

हे माँ भवानी! मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र को नहीं जानता हूँ। सूर्य, चन्द्रमा,तथा अन्य किसी भी देवता को भी नहीं जानता हूँ। हे शरण देनेवाली माँ भवानी! तुम्हीं मेरा सहारा हो, मैं केवल तुम्हारी शरण हूँ, एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

Meaning:- 6.1: Little do I know about The Lord of Creation (Brahma), The Lord of Ramaa (Goddess Lakshmi) (Vishnu), The Great Lord (Shiva), The Lord of the Devas (Indra),
6.2: The Lord of the Day (Surya) or The Lord of the Night (Chandra),
6.3: I do not know about other gods, but always seeking Your Refuge,
6.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

हे भवानी! तुम विवाद, विषाद में, प्रमाद, प्रवास में, जल, अनल में (अग्नि में), पर्वतों में, शत्रुओं के मध्य में और वन (अरण्य) में सदा ही मेरी रक्षा करो, हे भवानी माँ! मुझे केवल तुम्हारा ही आश्रय है, एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

Meaning:- 7.1: During Dispute and Quarrel, during Despair and Dejection,
during Intoxication and Insanity, in Foreign Land,
7.2: In Water, and Fire, in Mountains and Hills, amidst Enemies,
7.3: In Forest, please Protect me,
7.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥

हे माता! मैं सदा से ही अनाथ, दरिद्र, जरा-जीर्ण, रोगी हूँ। मै अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूँगा, विपद्ग्रस्त (विपत्तिओं से घिरा रहने वाला) और नष्ट हूँ। अत: हे भवानी माँ! अब तुम्हीं एकमात्र मेरी गति हो, मैं केवल आपकी ही शरण हूँ, तूम्हीं मेरा सहारा हो।

Meaning:- 8.1: I am Helpless, Poor, Afflicted by Old Age and Disease,
8.2: Very Weak and Miserable, always with a Pale Countenance,
8.3: Fallen Asunder, Always surrounded by and Lost in Troubles and Miseries,
8.4: You are my Refuge, You Alone are my Refuge, Oh Mother Bhavani.

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

राधाषोडशनामस्तोत्रम्

श्रीनारायण उवाच:-

राधा रासेश्वरी रासवासिनी रसिकेश्वरी ।
कृष्णाप्राणाधिका कृष्णप्रिया कृष्णस्वरूपिणी ॥१॥
कृष्णवामाङ्गसम्भूता परमानन्दरूपिणी ।
कृष्णा वृन्दावनी वृन्दा वृन्दावनविनोदिनी ॥२॥
चन्द्रावली चन्द्रकान्ता शरच्चन्द्रप्रभानना ।
नामान्येतानि साराणि तेषामभ्यन्तराणि च ॥३॥

उपरोक्त 1 से 3 श्लोकों का अर्थ – श्री नारायण ने कहा – राधा, रासेश्वरी, रासवासिनी, रसिकेश्वरी, कृष्णप्राणाधिका, कृष्णस्वरूपिणी, कृष्णवामाङ्गसम्भूता, परमानन्दरूपिणी, कृष्णा, वृन्दावनी, वृन्दा, वृन्दावनविनोदिनी, चन्द्रावली, चन्द्रकान्ता औ शरच्चन्द्रप्रभानना – ये सारभूत सोलह नाम उन सहस्त्र नामों के ही अन्तर्गत हैं।

Sri Narayana said:- 1.1: (The sixteen names of Radharani are) Radha, Raaseshwari, Raasavasini, Rasikeshwari, ...
1.2: ... Krishnapranadhika, Krishnapriya, Krishna Swarupini,
2.1: ... Krishna Vamanga Sambhuta, Paramanandarupini, ...
2.2: ... Krishnaa, Vrindavani, Vrindaa, Vrindavana Vinodini,
3.1: ... Chandravali, Chandrakanta, Sharacchandra Prabhanana (Sharat Chandra Prabhanana),
3.2: These (sixteen) Names, which are the essence are included in those (thousand names),

राधेत्येवं च संसिद्धौ राकारो दानवाचकः ।
स्वयं निर्वाणदात्री या सा राधा परिकिर्तिता ॥४॥

राधा शब्द में "धा" का अर्थ – संसिद्धि अर्थात निर्वाण है और "रा" का अर्थ दानवाचक है. जो स्वयं निर्वाण(मोक्ष) प्रदान करने वाली है, वे "राधा" कही गई हैं।

4.1: (The first name) Radha points towards Samsiddhi (Moksha), and the Ra-kara is expressive of Giving (hence Radha means the giver of Moksha),
4.2: She Herself is the giver of Nirvana (Moksha) (through devotion to Krishna); She Who is proclaimed as Radha (is indeed the giver of Moksha by drowning the devotees in the divine sentiment of Raasa),

रासेश्वरस्य पत्नीयं तेन रासेश्वरी स्मृता ।
रासे च वासो यस्याश्च तेन सा रासवासिनी ॥५॥

रासेश्वर की ये पत्नी हैं इसलिए इनका नाम "रासेश्वरी" है. उनका रासमण्डल में निवास है, इससे वे "रासवासिनी" कहलाती हैं।

5.1: She is the consort of the Raasheswara (Lord of Raasa) (referring to Krishna in the divine dance of Raasa in Vrindavana), hence She is known as Raasheswari,
5.2: She abides in Raasa (i.e. Immersed in the devotional sentiment of Raasa), hence She is known as Raasavasini (whose mind is always immersed in Raasa),

सर्वासां रसिकानां च देवीनामीश्वरी परा ।
प्रवदन्ति पुरा सन्तस्तेन तां रसिकेश्वरीम् ॥६॥

वे समस्त रसिक देवियों की परमेश्वरी हैं अत: पुरातन संत-महात्मा उन्हें "रसिकेश्वरी" कहते हैं।

6.1: Among all the Devis who are Rasikas (i.e. delight in the devotional sentiment), She is the highest, (She is) the goddess of Rasa (i.e. expresses the highest degree of Rasa),
6.2: Hence in ancient times the Saints called Her as Rashikeshwari (the goddess of Rasa) (through whom the fountain of Rasa flows),

प्राणाधिका प्रेयसी सा कृष्णस्य परमात्मनः ।
कृष्णप्राणाधिका सा च कृष्णेन परिकीर्तिता ॥७॥

परमात्मा श्रीकृष्ण के लिए वे प्राणों से भी अधिक प्रियतमा हैं, अत: साक्षात श्रीकृष्ण ने ही उन्हें 'कृष्णप्राणाधिका' नाम दिया है।

7.1: She is the beloved of Sri Krishna, the Paramatman, dearer than His life (hence She takes the devotees beyond the Samsara to the Paramatman through Love of Krishna),
7.2: She is (called) Krishna Pranadhika, this has been proclaimed by Sri Krishna Himself,

कृष्णस्यातिप्रिया कान्ता कृष्णेन वास्याः प्रियः सदा ।
सर्वैर्देवगणैरुक्ता तेन कृष्णप्रिया स्मृता ॥८॥

वे श्रीकृष्ण की अत्यन्त प्रिया कान्ता हैं अथवा श्रीकृष्ण ही सदा उन्हें प्रिय हैं इसलिए समस्त देवताओं ने उन्हें 'कृष्णप्रिया' कहा है।

8.1: She is a very dear consort of Krishna, and always loves to be enveloped by Krishna (hence She attracts the grace of Krishna for the devotees),
8.2: Therefore all the Devas declare Her as Krishna Priya,

कृष्णरूपं संनिधातुं या शक्ता चावलीलया ।
सर्वांशैः कृष्णसदृशी तेन कृष्णस्वरूपिणी ॥९॥

वे श्रीकृष्ण रुप को लीलापूर्वक निकट लाने में समर्थ हैं तथा सभी अंशों में श्रीकृष्ण के सदृश हैं, अत: 'कृष्णस्वरुपिणी' कही गई हैं।

9.1: She has the ability to effortlessly bring the form of Krishna near (hence She can effortlessly attract the grace of Krishna for the devotees),
9.2: In all parts She is a match of Krishna (they together forming one Soul); hence She is known as Krishna Swarupini,

वामाङ्गार्धेन कृष्णस्य यां सम्भूता परा सती ।
कृष्णवामाङ्गसम्भूता तेन कृष्णेन कीर्तिता ॥१०॥

परम सती श्रीराधा श्रीकृष्ण के आधे वामाङ्ग भाग से प्रकट हुई हैं, अत: श्रीकृष्ण ने स्वयं ही उन्हें 'कृष्णवामांगसम्भूता' कहा है.

10.1: She has manifested from the Left Half of Sri Krishna, and She is the Supreme Sati (One totally surrendered to Krishna) (hence She attracts the devotees towards the state of complete surrender to Krishna),
10.2: Therefore Sri Krishna Himself has declared Her as Krishna Vamanga Sambhuta,

परमानन्दराशिश्च स्वयं मूर्तिमती सति ।
श्रुतिभिः कीर्तिता तेन परमानन्दरूपिणी ॥११॥

सती श्रीराधा स्वयं परमानन्द की मूर्तिमती राशि हैं, अत: श्रुतियों ने उन्हें 'परमानन्दरूपिणी' की संज्ञा दी है।

11.1: She is Herself a fountain of Supreme Bliss (originating from complete surrender to Krishna), and personification of Sati (one-pointed devotion to Krishna) (hence She connects the devotees to the supreme bliss of Krishna),
11.2: Therefore the Scriptures have declared Her as Paramananda Rupini,

कृषिर्मोक्षार्थवचनो न एवोत्कृष्टवाचकः ।
आकारो दातृवचनस्तेन कृष्णा प्रकीर्तिता ॥१२॥

'कृष' शब्द मोक्ष का वाचक है, 'ण' उत्कृष्टता का बोधक है और 'आकार' दाता के अर्थ में आता है. वे उत्कृष्ट मोक्ष की दात्री हैं इसलिए 'कृष्णा' कही गई हैं।

12.1: The word "Krss" is indicative of Moksha (Liberation); The letter "Nna" is indicative of Excellence, ...
12.2: ... The letter "Aa" is indicative of Giver; (Combining them forms Krishnaa); Therefore She is proclaimed as Krishnaa (hence She takes the devotees to the excellent state of Moksha by devotion to Krishna),

अस्ति वृन्दावनं यस्यास्तेन वृन्दावनी स्मृता ।
वृन्दावनस्याधिदेवी तेन वाथ प्रकीर्तिता ॥१३॥

वृन्दावन उन्हीं का है इसलिए वे 'वृन्दावनी' कही गई है अथवा वृन्दावन की अधिदेवी होने के कारण उन्हें यह नाम प्राप्त हुआ है।

13.1: Vrindavana is Her; therefore She is declared as Vrindavani (hence She takes the minds of the devotees to the holy Vrindavana),
13.2: Or, She is the presiding Goddess of Vrindavana, therefore She is proclaimed thus (as Vrindavani),

सङ्घः सखीनां वृन्दः स्यादकारोऽप्यस्तिवाचकः ।
सखिवृन्दोऽस्ति यस्याश्च सा वृन्दा परिकीर्तिता ॥१४॥

सखियों के समुदाय को "वृन्द" कहते हैं और 'अकार' सता का वाचक है. उनके समूह की, समूह सखियाँ हैं इसलिए वे 'वृन्दा' कही गई हैं।

14.1: The group of Sakhis (Female Companions) is (called) Vrinda, the A-kara (following the word Vrinda) is expressive of Her Presence (among the Sakhis),
14.2: Since She is present with Her Sakhis (Female Companions), therefore She is proclaimed as Vrindaa (hence She spreads the Love of Krishna among the devotees),

वृन्दावने विनोदश्च सोऽस्या ह्यस्ति च तत्र वै ।
वेदा वदन्ति तां तेन वृन्दावनविनोदिनीम् ॥१५॥

उन्हें सदा वृन्दावन में विनोद प्राप्त होता है, अत: वेद उनको 'वृन्दावनविनोदिनी' कहते हैं।

15.1: Her Pastimes and Joys (and Her entire mind) are in Vrindavana (in companionship and remembrance of Sri Krishna there) (hence She attracts the minds of the devotees to Vrindavana),
15.2: Therefore the Vedas call Her as Vrindavana Vinodinim,

नखचन्द्रावली वक्त्रचन्द्रोऽस्ति यत्र संततम् ।
तेन चन्द्रावली सा च कृष्णेन परिकीर्तिता ॥१६॥

वे सदा मुखचन्द्र तथा नखचन्द्र की अवली अर्थात पंक्ति से युक्त हैं. इस कारण श्रीकृष्ण ने उन्हें 'चन्द्रावली' नाम दिया है।

16.1: She captures the beauty of the Moon, stringing it from Toe-Nails (Nakha Chandra) to Her Face (Vaktra Chandra) (hence She illumines the devotees with the beauty of devotion to Krishna),
16.2: Therefore Sri Krishna called Her as Chandravali,

कान्तिरस्ति चन्द्रतुल्या सदा यस्या दिवानिशम् ।
सा चन्द्रकान्ता हर्षेण हरिणा परिकीर्तिता ॥१७॥

उनकी कान्ति दिन-रात सदा ही चन्द्रमा के तुल्य बनी रहती है, अत: श्रीहरि हर्षोल्लास के कारण उन्हें 'चन्द्रकान्ता' कहते हैं।

17.1: Her Beauty and Loveliness always shine like the Moon, Day and Night (hence She fills the devotees with the joy of devotion to Krishna),
17.2: Therefore Sri Hari with great Joy called Her as Chandrakanta,

शरच्चन्द्रप्रभा यस्याश्चाननेऽस्ति दिवानिशम् ।
मुनिना कीर्तिता तेन शरच्चन्द्रप्रभानना ॥१८॥

उनके मुख पर दिन-रात शरत्काल के चन्द्रमा की सी प्रभा फैली रहती है, इसलिए मुनिमण्डली ने उन्हें 'शरच्चन्द्रप्रभानना' कहा है.

18.1: Her Face shines with the Splendour of the Autumn Moon, Day and Night (hence She fills the devotees with the splendour of Krishna Consciousness),
18.2: Therefore the Munis called Her as Sharat Chandra Prabhanana,

इदं षोडशनामोक्तमर्थव्याख्यानसंयुतम् ।
नारायणेन यद्दत्तं ब्रह्मणे नाभिपङ्कजे ।
ब्रह्मण च पुरा दत्तं धर्माय जनकाय मे ॥१९॥
धर्मेण कृपया दत्तं मह्यमादित्यपर्वणि ।
पुष्करे च महातीर्थे पुण्याहे देवसंसदि ।
राधाप्रभावप्रस्तावे सुप्रसन्नेन चेतसा ॥२०॥

श्लोक 19 और 20 का अर्थ – यह अर्थ और व्याख्याओं सहित षोडश-नामावली कही गई, जिसे नारायण ने अपने नाभि कमल पर विराजमान ब्रह्मा को दिया था. फिर ब्रह्मा जी ने पूर्वकाल में मेरे पिता धर्मदेव को इस नामावली का उपदेश दिया और श्रीधर्म देव ने महातीर्थ पुष्कर में सूर्यग्रहण के पुष्य पर्व पर देव सभा के बीच मुझे कृपापूर्वक इन सोलह नामों का उपदेश दिया था. श्रीराधा के प्रभाव की प्रस्तावना होने पर बड़े प्रसन्नचित्त से उन्होंने इन नामों की व्याख्या की थी।

19.1: These sixteen Names uttered along with their meanings and expositions, ...
19.2: ... were given by Sri Narayana to Lord Brahma, who was sitting on the Lotus of His navel,
19.3: (Then) Lord Brahma in ancient times gave this to Dharmadeva, my father,
20.1: Dharmadeva out of grace gave this during the Solar Eclipse ...
20.2: ... in the great holy pilgrimage of Pushkara, on the auspicious day in the assembly

of Devas,
20.3: Discussing the topic of the majesty of Radharani, he with great joy of mind (gave these sixteen names),

इदं स्तोत्रं महापुण्यं तुभ्यं दत्तं मया मुने ।
निन्दकायावैष्णवाय न दातव्यं महामुने ॥२१॥

मुने! यह राधा का परम पुण्यमय स्तोत्र है जिसे मैंने तुमको दिया. महामुने! जो वैष्णव न हो तथा वैष्णवों का निन्दक हो उसे इसका उपदेश नहीं देना चाहिए।

21.1: This Stotra, which is very holy, is being given by me to you, O Muni,
21.2: This is not to be given to one who is censorious to Vaishnavas, O Mahamuni,

यावज्जीवमिदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
राधामाधवयोः पादपद्मे भक्तिर्भवेदिह ॥२२॥

जो मनुष्य जीवन भर तीनों संध्याओं के समय इस स्तोत्र का पाठ करता है उसकी यहाँ राधा-माधव के चरण कमलों में भक्ति होती है।

22.1: The person who recites this stotra throughout his life during the three junctures of the day (dawn, noon and sunset), ...
22.2: ... will attain devotion to the Lotus-Feet of Radha-Madhava, here, in this world,

अन्ते लभेत्तयोर्दास्यं शश्वत्सहचरो भवेत् ।
अणिमादिकसिद्धिं च सम्प्राप्य नित्यविग्रहम् ॥२३॥

अन्त में वह उन दोनों का दास्यभाव प्राप्त कर लेता है और दिव्य शरीर एवं अणिमा आदि सिद्धि को पाकर सदा उन प्रिया-प्रियतमा के साथ विचरता है।

23.1: At the end, he attains Dasya Bhava (Devotion with the attitude of Service) towards them (i.e. towards Radha-Madhava), and becomes their eternal Companion,
23.2: He attains Anima and other Siddhis in an Eternal form (i.e. in a Divine Body),

व्रतदानोपवासैश्च सर्वैर्नियमपूर्वकैः ।
चतुर्णां चैव वेदानां पाठैः सर्वार्थसंयुतैः ॥२४॥
सर्वेषां यज्ञतीर्थानां करणैर्विधिबोधितैः ।
प्रदक्षिणेन भूमेश्च कृत्स्नाया एव सप्तधा ॥२५॥
शरणागतरक्षायामज्ञानां ज्ञानदानतः ।
देवानां वैष्णवानां च दर्शनेनापि यत् फलम् ॥२६॥
तदेव स्तोत्रपाठस्य कलां नार्हति षोडशीम् ।
स्तोत्रस्यास्य प्रभावेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥२७॥

24 से 27 श्लोक का अर्थ – नियमपूर्वक किए गये सम्पूर्ण व्रत, दान और उपवास से, चारो वेदों के अर्थ सहित पाठ से, समस्त यज्ञों और तीर्थों के विधिबोधित अनुष्ठान तथा सेवन से, सम्पूर्ण भूमि की सात बार की गई परिक्रमा से, शरणागत की रक्षा से, अज्ञानी को ज्ञान देने से तथा देवताओं और वैष्णवों का दर्शन करने से भी जो फल प्राप्त होता है वह इस स्तोत्र पाठ की सोलहवीं कला के बराबर नहीं है. इस स्तोत्र के प्रभाव से मनुष्य जीवन मुक्त हो जाता है ।

24.1: By Vrata (Religious observances), Daana (Charity) and Upavasa (Religious Fasting), performed following all the prescribed rules, ...
24.2: ... or by reciting the Four Vedas along with their meanings, ...
25.1: ... or by performing all Yagyas (Sacrifices) or going to Tirthas (Pilgrimages) following the prescribed rules,
25.2: .. or indeed by circumambulating the entire Earth seven times, ...
26.1: ... by protecting the seekers of Refuge, or by giving Knowledge to the Ignorant, ...
26.2: ... or by seeing the Devas or even Vaishnavas, that Fruit ...
27.1: ... indeed is not one-sixteenth part (of the Fruit) obtained by reciting this Stotra,
27.2: By the efficacy of this Stotra, a person becomes Jivan Mukta (liberated while living

कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च ।
नन्दगोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥

कस्तुरी तिलकम ललाटपटले, वक्षस्थले कौस्तुभम।
नासाग्रे वरमौक्तिकम करतले, वेणु करे कंकणम।
सर्वांगे हरिचन्दनम सुललितम, कंठे च मुक्तावलि।
गोपस्त्री परिवेश्तिथो विजयते, गोपाल चूडामणी॥

श्री कृष्णाष्टकम्

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम् |
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् || १ ||

ब्रजमण्डल के भूषण तथा समस्त पापों के नाश करने वाले, सच्चे भक्त के चित्त में विहार कर आनन्द देने वाले नन्दनन्दन का मैं सर्वदा भजन करता हूँ । जिनके मस्तक पर मनोहर मोर पंखों के गुच्छ हैं, जिनके हाथों में सुरीली मुरली है तथा जो प्रेम तरंगों के समुद्र हैं उन नटनागर श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है ।

I worship the naughty Krishna, the sole ornament of Vraja, Who destroys all the sins (of His devotees), Who delights the minds of His devotees, the joy of Nanda, Whose head is adorned with peacock feathers, Who holds a sweet-sounding flute in His hand, and Who is the ocean of the art of love.

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् |
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णावारणम् || २ ||

कामदेव का गर्वनाश करने वाले, बड़े-बड़े चंचल लोचनों वाले ग्वाल बालोंका शोक नष्ट करने वाले कमललोचन को मेरा नमस्कार है । करकमल पर गोवर्धन पर्वत थारण करने वाले, मुस्कान युक्त सुन्दर चितवन वाले इन्द्र का मान मर्दन करने वाले, गजराज के सदृश मत्त श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है ।

I bow to Krishna Who rid Kama deva of his pride, Who has beautiful, large eyes, Who takes away the sorrows of the Gopas (cowherds), the lotus-eyed One . I bow to Krishna Who lifted the (Govardhana) hill with His hand, Whose smile and glance are extremely attractive, Who destroyed the pride of Indra, and Who is like the King of elephants.

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् |
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् || ३ ||

कदम्ब पुष्णों के कुण्डल धारण करने वाले अत्यन्त सुन्दर गोल कपोलों वाले, ब्रजांगनाओं के लिये ऐसे परम दुर्लभ श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है। ग्वालबाल और श्रीनन्दरायजी के सहित मोदमयी यशोदा जी को आनंद देने वाले श्रीगोपनायक को मेरा नमसकार है ।

I bow to that Krishna Who wears earrings made of Kadamba flowers, Who has beautiful cheeks, Who is the only darling of the Gopikas of Vraja, and Who is very difficult to attain (by any means other than Bhakti). I bow to Krishna Who is accompanied by Gopas (cowherds), Nanda, and an overjoyed Yashoda,Who gives (His devotees) nothing but happiness, and Who is the Lord of the Gopas.

सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम् |
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् || ४ ||

मेरे हृदय में सदा अपने चरणकमलों को स्थापन करने वाले सुन्दर घुंघराली अलकों वाले नन्द लाल को मैं नमस्कार करता हूँ, समस्त दोषों को भस्म कर देने वाले, समस्त लोकों का पालन करने वाले,

समस्त गोपकुमारों के हृदय तथा श्रीनन्दरायजी की वात्सल्य लालसा के आधार श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है ।

I bow to the son of Nanda, Who has placed His lotus feet in my mind and Who has beautiful curls of hair . I adore Krishna Who removes all defects, Who nourishes all the worlds and Who is desired by all the Gopas and Nanda.

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् |
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदालिसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् || ५ ||

भूमि का भार उतारने वाले, भवसागर से तारने वाले कर्णधार श्रीयशोदाकिशोर चित्तचोर को मेरा नमस्कार है । कमनीय कटाक्ष चलाने की कला में प्रवीण सर्वदा दिव्य सखियों से सेवित, नित्य नये-नये प्रतीत होने वाले नन्दलाल को मेरा नमस्कार है ।

I bow to Krishna Who relieves the burden of the earth (by vanquishing innumerable demons and other evil forces), Who helps us cross the ocean of miseries, Who is the son of Yasoda, and Who steals the hearts of everyone . I bow to Nanda's son Who has extremely attractive eyes, Who is always accompanied by saintly devotees, and Whose (pastimes and form) appear newer and newer, day by day.

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् |
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् || ६ ||

गुणों की खान और आनन्द के निधान कृपा करने वाले तथा कृपा पर (अर्थात् कृपा करने के लिये तत्पर) देवताओं के शत्रु दैत्यों का नाश करने वाले, गोपनन्दन को मेरा नमस्कार है । नवीन-गोप सखा नटवर नवीन खेल खेलने के लिये लालायित, घनश्याम अंग वाले, बिजली सदृश सुन्दर पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है।

Krishna is the repository of all good qualities, all happiness, and grace . He destroys the enemies of the gods and delights the Gopas . I bow to the mischievous cowherd

Krishna, Who is attached to His exploits, which (appear) new (every day), Who has the handsome complexion of a dark cloud, and Who wears a yellow garment (pitambara) that shines likes lightning.

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् |
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम् || ७ ||

समस्त गोपों को आनन्दित करने वाले हृदयकमल को प्रफुल्लित करने वाले, निकुंज के बीच में विराजमान प्रसन्नमन सूर्य के समान प्रकाशमान श्रीकृष्ण भगवान को मेरा नमस्कार है । सम्पूर्ण अभिलषित कामनाओं को पूर्ण करने वाले, वाणों के समान चोट करने वाली, चितवन वाले, मधुर मुरली में गीत गाने वाले, निकुंजनायक को मैं नमस्कार करता हूँ ।

Krishna delights all the Gopas and (plays with them) in the center of the grove (kunja). He is appears as
resplendent and pleasing as the sun and causes the lotus that is the heart (of the devotee) to blossom
with joy . I bow to that Lord of the grove of creepers Who completely fulfills the desires (of the devotees), Whose beautiful glances are like arrows, and Who plays melodious tunes on the flute.

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवन्हिपायिनम् |
किशोरकान्तिरंजितं दृअगंजनं सुशोभितं
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् || ८ ||

चतुर गोपिकाओं की मनोज्ञ तल्प पर शयन करने वाले, कुंजवन में बढ़ी हुई बिरह अग्नि को पान करने वाले तथा श्रीवृषभानुकिशोरी की अंग कान्ति से जिनके अंग झलक रहे हैं, जिनके नेत्रों में अंजन शोभा दे रहा है, गजराज को मोक्ष देने वाले तथा श्रीजी के साथ विहार करने वाले श्रीकृष्णचन्द्र भगवान को मेरा नमस्कार है।

Krishna lies down on the bed that is the minds of the intelligent Gopis who always think of Him . I adore Him Who drank the spreading forest-fire (in order to protect the cowherd community). I bow to Krishna Who has eyes which are made attractive

by His boyhood charm and a black unguent (anjan), Who liberated the elephant Gajendra (from the jaws of the crocodile), and Who is the consort of Lakshmi (shri).

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् |
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान || ९ ||

जहां कहीं भी जैसी परिस्थिति में मैं रहूं, सदा श्रीकृष्णचन्द्र की सरस कथाओं का मेरे द्वारा सर्वदा गान होता रहे बस ऐसी कृपा रहे । इन दो स्तोत्र अष्टकों को जो प्रातःकाल उठकर भक्ति भाव में स्थित होकर नित्य पाठ करते हैं, उनको ही साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र मिलते हैं ।

O Lord Krishna! Please bless me so that I may sing your glories and pastimes, regardless of the position I am in. Anyone who studies or recites these two authoritative ashtakas will be blessed with devotion to Krishna in every rebirth.

Note: The two ashtakas referred to above are the shri Krishna Ashtaka and the Krishna Ashtaka.

इति श्रीमद शंकराचार्यकृतं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥

अच्युत ,केशव ,राम नारायण ,कृष्ण ,दामोदर ,वासुदेव हरि श्रीधर , माधव , गोपिकावल्लभ तथा जानकी नायक रामचन्द्रजी को मैं भजता हूँ।

Meaning:- 1.1: I Worship You O Acyuta (the Infallible One), I Worship You O Keshava (Who Controls everyone, Who has beautiful Hair and Who killed demon Keshi), I Worship You O Rama the Incarnation of Narayana (Who is without any blemish),
1.2: I Worship You O Krishna (Who attracts others by His Divine Attributes and Beauty) Who is known as Damodara (because of being tied by Mother Yashoda around the waist) , I Worship You O Vasudeva (Who was the Son of Vasudeva), I Worship You O Hari (Who takes away the Sins, Who Receives the Offerings of the Yagna),
1.3: I Worship You O Sridhara (Who Bears Sri on His Chest), I Worship You O Madhava (Consort of Mahalakshmi), I Worship You O the One Who was the most Beloved of the Gopikas (the Cowherd Girls of Vrindavana) and
1.4: I Worship You O Ramachandra the Lord of Devi Janaki.

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ॥२॥

अच्युत , केशव , सत्यभामापति , लक्ष्मीपति , श्रीधर, राधिकाजी द्वारा आराधित , लक्ष्मीनिवास , परम सुन्दर , देवकीनन्दन , नन्दकुमार का चित्त से ध्यान करता हूँ।

Meaning:- 2.1: I Worship You O Acyuta (the Infallible One), I Worship You O Keshava (Who Controls everyone, Who has beautiful Hair and Who killed the demon Keshi), I Worship You O the One Who was the Lord of Satyabhama,
2.2: I Worship You O Madhava (Consort of Mahalakshmi), I Worship You O Sridhara (Who Bears Sri on His Chest), I Worship You O the One Who was Worshipped by Radhika,
2.3: I Worship You O the One Who is the Temple of Indira (i.e. the Sacred Abiding Place of Devi Mahalakshmi in His Heart), I Worship You O the One Who has a Beautiful

Splendour,
2.4: I Worship You O the One Who was the Son of Devaki and I Worship You O the One Who became the Son of Nanda by being Given to him.

विष्णवे जिष्णवे शाङ्खिने चक्रिणे रुक्मिणिरागिणे जानकीजानये ।
बल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥३॥

जो विभु हैं, विजयी हैं, शंख – चक्रधारी हैं, रुक्मणीजी के परम प्रेमी हैं, जानकीजी जिनकी धर्मपत्नी हैं तथा जो ब्रजांगनाओं के प्राणाधार हैं उन परम पूज्य , आत्मस्वरूप कंसविनाशक मुरलीधर को मैं नमस्कार करता हूँ।

Meaning:- 3.1: I Worship You O Vishnu (the All-Pervading One), I Worship You O Jishnu (the ever Victorious One), I Worship You O the holder of Sankha (the Conch-Shell), I Worship You O the holder of Chakra (the Discus),
3.2: I Worship You O the One Who was extremely Dear to Rukmini (as Sri Krishna), and I Worship You O the One Who had Devi Janaki as His Wife (as Sri Rama),
3.3: I Worship You Who was Worshipped by the beloved Cowherd Girls of Vrindavana in their Hearts,
3.4: I reverantially Salute You O the One Who Destroyed Kamsa and Who Played beautiful Tunes in His Flute.

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥४॥

हे कृष्ण ! हे गोविन्द ! हे राम ! हे नारायण ! हे रमानाथ ! हे वासुदेव ! हे अजेय ! हे शोभाधाम ! हे अच्युत ! हे अनन्त ! हे माधव ! हे अधोक्षज (इन्द्रियातीत) ! हे द्वारिकानाथ ! हे द्रौपदीरक्षक ! (मुझ पर कृपा कीजिये)।

Meaning:- 4.1: I Worship You O Krishna, the Incarnation of Govinda (Who can be known through Vedas), I Worship You O Rama, the Incarnation of Narayana (Who is without any blemish),
4.2: I Worship You O Sripati (the Consort of Sri), I Worship You O Vasudeva (Who was the Son of Vasudeva), the Unconquerable One, and I Worship You O Srinidhi (Who is the Storehouse of Sri),

4.3: I Worship You O Acyuta (Who is the Infallible One) and Endless, and I Worship You O Madhava (Consort of Mahalakshmi) the Incarnation of Adhokshaja (Who can be known only through Agamas),
4.4: I Worship You O the Lord of Dwaraka and One Who Saved Draupadi.

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरौः सेवितोऽगस्तसम्पूजितो राघव पातु माम् ॥५॥

राक्षसों पर अति कुपित, श्री सीताजी से सुशोभित, दण्डकारण्य की भूमि की पवित्रता के कारण, श्री लक्ष्मणजी द्वारा अनुगत, वानरों से सेवित, श्री अगस्त्यजी से पूजित रघुवंशी श्री राम मेंरी रक्षा करें।

Meaning:- 5.1: I Worship You O the One Who Agitated the Rakshasas (as Sri Rama), and I Worship You O the One Who is Adorned by Devi Sita at His side,
5.2: I Worship You O the One Who was the Cause of Purification of the Land of Dandakaranya,
5.3: I Worship You O the One Who was Attended by Lakshmana, and Served by the Vanaras (Monkeys) ,
5.4: I Worshipped You O the One Who was Worshipped by sage Agastya; O Raghava please Protect Me.

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।
पूतनाकोपकःसूरजाखेलनो बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥६॥

धेनुक और अरिष्टासुर आदि का अनिष्ट करने वाले , शत्रुओं का ध्वंस करने वाले , केशी और कंस का वध करने वाले , वंशी को बजाने वाले , पूतना पर कोप करने वाले , यमुनातट विहारी बालगोपाल मेंरी सदा रक्षा करें।

Meaning:- 6.1: I Worship You O the One Who killed the Ass-demon Dhenuka and Bull-demon Aristaka who came with Evil intentions,
6.2: I Worship You O the One Who killed Horse-demon Keshi and took away the life of Kamsa, and I Worship You Who was a Player of beautiful Tunes in Flute,
6.3: I Worship You O the One Who showered His anger on Putana (by killing Her) and Who Played on the bank of river Yamuna, the river born of the Sun god,
6.4: I Worship You O Balagopala, Please Protect Me Always (by thwarting my dangers as You thwarted the attacks of the demons).

विद्युद्द्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥७॥

विद्युत्प्रकाश के सदृश जिनका पीताम्बर विभासित हो रहा है , वर्षाकालीन मेंघों के समान जिनका अति शोभायमान शरीर है , जिनका वक्ष:स्थल वनमाला से विभूषित है और चरणयुगल अरुणवर्ण हैं उन कमलनयन श्रीहरि को मैं भजता हूँ ।

Meaning:- 7.1: I Worship You O the One Whose Garments Flashed like the Rise of Lightning in the Sky,
7.2: I Worship You O the One Whose Handsome Form moved like the Clouds of the Rainy Season,
7.3: I Worship You O the One Whose Chest is Adorned with Vanamala (Garland of Wild Flowers) and
7.4: I Worship You O the One Whose Pair of Feet is Beautiful Reddish and Whose Eyes are Beautiful like Lotus.

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमाननं रत्नमौलि लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥८॥

जिनका मुख घुंघराली अलकों से सुशोभित हो रहा है , उज्जवल हार , केयूर (बाजूबन्द), कंकण और किकिणी कलाप से सुशोभित उन मंन्जुलमूर्ति श्रीश्यामसुन्दर को भजता हूँ ।

Meaning:- 8.1: I Worship You O the One Whose Shining Face is Adorned with Beautiful Locks of Curly Hairs,
8.2: I Worship You O the One Whose Head is Adorned with Shining Gem, and Whose Face is Adorned with Shining Ear-Rings,
8.3: I Worship You O the One Whose Arms and Waist are Adorned with Shining Bracelets,
8.4: I Worship You O the One Whose Dark Body is Adorned with Tiny Bells making Pleasing Sounds.

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भरस्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥९॥

जो पुरूष इस अति सुन्दर छन्द वाले और अभीष्ट फलदायक अच्युताष्टक को प्रेम और श्रद्धा से नित्य पढ़ता है, विश्वम्भर विश्वकर्ता श्रीहरि शीघ्र ही उसके वशीभूत हो जाते हैं, उसकी समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

Meaning:- 9.1: Whoever Recites this Acyutashtakam, which is the Giver of Istha (Chosen Desire or nearness to Chosen Deity),
9.2: With Devotion, Everyday and with Longing for the Purusha (the Supreme Being),
9.3: This Acyutashtakam which Beautifully Encircles the All-Sustaining Being (with His various Names and Qualities),
9.4: (That Person) by the Will of Hari, will Quickly reach the Abode of Hari.

Go to Index (विषय सूची पर जाएँ)

श्रीविष्णुषट्पदी

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम् ।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः ॥ १

हे विष्णु भगवान! मेरी उद्दण्डता दूर कीजिए, मेरे मन का दमन कीजिए और विषयों की मृगतृष्णा को शान्त कर दीजिए, प्राणियों के प्रति मेरा दयाभाव बढ़ाइए और इस संसार-समुद्र से मुझे पार लागाइए।

Oh Lord Vishnu! Drive away (my) immodesty, quell (my) mind and dispel the mirage of objects of worldly pleasure. Spread out compassion (in me) for all beings. Make me cross the ocean of worldly existence (to the shore, viz. moksha) (1)

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे ।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥ २॥

भगवान लक्ष्मीपति के उन चरण कमलों की वन्दना करता हूँ जिनका मकरन्द गंगा और सौरभ सच्चिदानन्द हैं तथा जो संसार के भय और खेद का छेदन करने वाले हैं।

I bow at the lotus-feet of vishïu (the Lord of Lakshmi) of which the celestial Gañgá is the pollen (or honey), which afford the enjoyment of their fragrance and stand out as 'Sat', 'Cit' and 'Ánanda' (as the true Brahman) and which cut off the terror and pain of birth in this world. (2)

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥ ३॥

हे नाथ!, मुझ में और आप में, भेद ना होने पर भी, मैं ही आपका हूँ, आप मेरे नहीं क्योंकि तरंग ही समुद्र की होती है, तरंग का समुद्र कहीं नहीं होता।

Oh! Protector! Even with the difference (between You and me) passing off, I become Yours but You do not become mine. Indeed (though there is no difference between the waves and the ocean) the wave belongs to the ocean but nowhere (never) does the ocean belong to the wave. (3)

उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥ ४॥

हे गोवर्धन धारिन्! हे इन्द्र के अनुज! हे राक्षस कुल के शत्रु! हे सूर्य-चन्द्र रूपी नेत्र वाले! आप जैसे प्रभु के दर्शन होने पर क्या संसार के प्रति उपेक्षा नहीं हो जाती? अपितु अवश्य ही हो जाती है।

Oh Lord who held aloft the mountain and who are the younger brother of the mountain-breaker (Indra)! Oh Lord who are the enemy of the race of demons and who have the Sun and the Moon as your eyes! When You, the mighty Lord, are seen, does not the setting aside of birth (removal of samsára) come about? (4)

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवता सदा वसुधाम् ।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ ५॥

हे परमेश्वर! मत्स्यादि अवतारों से अवतरित होकर पृथ्वी की सर्वदा रक्षा करने वाले आपके द्वारा संसार के त्रिविध तापों से भयभीत हुआ मैं रक्षा करने के योग्य हूँ?

Oh Supreme Lord! I am frightened by the suffering caused by birth (samsára). I am fit to be (I must be) saved by You who, coming down in the form of incarnations as fish, etc., always protect the world. (5)

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥ ६॥

हे गुणमन्दिर दामोदर! हे मनोहर मुखारविन्द गोविन्द! हे संसार समुद्र का मंथन करने के लिये मन्दराचल रूप! मेरे महान भय को आप दूर कीजिए।

Oh Lord with the (mark of the) binding rope on Your belly! Oh abode of all auspicious qualities! Oh charming Lord of the lotus-face! Oh Govinda! Oh Lord who are the very Mandara mountain in the matter of churning the ocean of Samsára (worldly life)! Please remove my great dread. (6)

नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥ ७॥

हे करुणामय नारायण! मैं सब प्रकार से आप के चरणों की शरण लूँ. यह पूर्वोक्त षट्पदी(6 पदों की स्तुति रूपिणी भ्रमरी) सर्वदा मेरे मुख कमल में निवास करें।

May the combination of the six words (the honey-bee) revel for ever in my lotus-mouth. (May this prayer - "Oh Náráyna! Oh Merciful One! Let me resort to your two feet as my refuge" ever revolve in my mouth. (7)

॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यविरचितं विष्णुषट्पदीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

प्रातः स्मरण स्तोत्र

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगति तुरीयम् ।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः ॥१॥

मैं प्रात:काल, हृदय में स्फुरित होते हुए आत्मतत्त्व का स्मरण करता/करती हूँ, जो सत, चित और आनन्दरूप है, परमहंसों का प्राप्य स्थान है और जाग्रदादि तीनों अवस्थाओं से विलक्षण है, जो स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत अवस्था को नित्य जानता है, वह स्फुरणा रहित ब्रह्म ही मैं हूँ, पंचभूतों का संघात(शरीर) मैं नहीं हूँ।

Meaning:- 1.1: In the Early Morning I remember (i.e. meditate on) the Pure Essence of the Atman shining within my Heart, ...
1.2: ... Which gives the Bliss of Sacchidananda (Existence Consciousness-Bliss essence), which is the Supreme Hamsa (symbolically a Pure White Swan floating in Chidakasha) and takes the mind to the state of Turiya (the fourth state, Superconsciousness),
1.3: Which knows (as a witness beyond) the three states of Dream, Waking and Deep Sleep, always,
1.4: That Brahman which is without any division shines as the I; and not this body which is a collection of Pancha Bhuta (Five Elements).

प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेतिनेतिवचनैर्निगमा अवोचं-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥२॥

जो मन और वाणी से अगम्य है, जिसकी कृपा से समस्त वाणी भास रही हैं, जिसका शास्त्र "नेति-नेति" कहकर निरूपण करते हैं, जिस अजन्मा देवदेवेश्वर अच्युत को अग्रय (आदि) पुरुष कहते हैं, मैं उसका प्रात:काल भजन करता/करती हूँ।

Meaning:- 2.1: In the Early Morning I worship That, Which is beyond the Mind and the Speech,

2.2: (And) By Whose Grace all Speech shine,
2.3: Who is expressed in the scriptures by statement "Neti Neti", since He cannot be adequately expressed by Words,
2.4: Who is called the God of the Gods, Unborn, Infallible (i.e. Imperishable) and Foremost (i.e. Primordial).

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥३

जिस सर्वस्वरुप परमेश्वर में यह समस्त संसार रज्जु में सर्प के समान प्रतिभासित हो रहा है, उस अज्ञानातीत, दिव्यतेजोमय, पूर्ण सनातन पुरुषोत्तम को मैं प्रात:काल नमस्कार करता/करती हूँ।

Meaning:- 3.1: In the Early Morning I Salute That Darkness (signifying without any Form) which is of the nature of Supreme Illumination,
3.2: Which is Purna (Full), Which is the Primordial Abode, and Which is called Purushottama (the Supreme Purusha),
3.3: In Whom this endless World is settled endlessly (i.e. from the beginning of creation), ...
3.4: ... and (this endless World) appear like a Snake over the Rope (of the Primordial Essence).

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम् ।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम् ॥४॥

ये तीनों श्लोक तीनों लोकों के भूषण हैं, इन्हें जो कोई प्रात:काल के समय पढ़ता है, उसे परमपद की प्राप्ति होती है।

Meaning:- 4.1: These three Slokas, which are Holy (unites one with the Whole), and the ornaments of the Three Worlds,
4.2: He who recites in the early Morning, goes to (i.e. attain) the Supreme Abode (of Brahman)